ॐ नमः श्रीगणेशाय नमः श्रीजनकवनसुवर्णकामि ॥ ॥ यजमान भासिवकं ॥ यजमान
य ॥ स्वानन कुय ॥ थगन ॥ वालाव ॥ स्वानकं लखव ह्वनकं न ॥ ॐ अद्य युगम ते
ति ॥ ॐ त्रहि हृदय सरु स्राक्षि ध्वा गजा बाति ॥ गवात ॥ त्रुकं वायमाल ह्वा ३ ता नार्थकं
वा कव ॥ वाक्व ॥ यजमानन स्वा जन कवु ननि मिवुर्थ सूर्याय अर्घं नमः ॥ ॐ भा ता श्री कावसम्य
ना ज ना नीं स्वा न शान्ति हि ॥ ॥ ह गम्बु द्व वनीयन व श्री मिलि व गा ह्न नं ॥ पूर्यं नमः ॥ ॥ धूनि वाय
॥ पूस्वा जनयाय ॥ ॐ नमानुकाय ॥ ॐ नानायर्थ नमः हुवति ॥ ॐ ति ढ्वि व हु ढि यानम्हु ल्वाद
वस्वा जनं ॥ ॥ वाक्वनवं स्वानकं विय ॥ ॥ वाक्वलन ॥ जुलवले मलुली कायाय ॥ ङुकं नम

कार्यं ॥ ॥न्यासं कुर्यात्॥ ॐ अनन्ताय हृदयाय नमः॥ इत्यादि॥ ॥अर्घपात्रपूजा॥ गन्धाक्ष
तधूपपुष्पं नमः॥ ॐ गंगा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वति नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्नि
धिं कुरु॥ ॥आत्मनः सिंचनं॥ आत्मने गन्धं नमः॥ आत्मने पुष्पं नमः॥ आसनाय नमः॥
॥पुष्पाक्षत दानं॥ ॐ गत्वा यामि॥ ॐ देवस्य त्वा॥ ॐ इमं मे गंगे॥ ॐ आयातु भगवान्॥ ॐ युवा सुवासाः॥
॥ॐ यद् क्रन्द॥ ॐ पश्यात इन॥ ॐ स्योना पृथिवी नो॥ ॐ यत् पयश्च॥ ॐ अग्निमीडे॥ ॐ धामन्द
वी॥ ॐ त्वं सोम विश्वभू॥ ॐ यज्ञेन॥ ॐ इदं विष्णु॥ ॐ अग्निमीळे॥ ॐ इषे त्वा॥ ॐ अग्न आ
या॥ ॐ शं नो देवी॥ ॐ उद्गच्छ॥ ॐ नदी ८॥ ॐ गणानां त्वा॥ ॐ इदं हविः॥ ॐ पावकान्॥

॥ॐ धीरम॥ ॐ अस्माकमिन्द्र॥ ॐ नमो रुद्राय॥ ॐ सरस्वती॥ ॐ अघोरेभ्यो॥ कुसि
मम फलदानार्चनं॥ ॥गन्धाद्यनन्तादिचतुर्दशदेवता॥ ॐ अनन्ताय नमः॥ ॐ अनन्तरूप
विष्णुर्वेदाभिमन्नू नमामि विष्णुर्वेदाभिधाना मम मिविष्णुर्वेदाभिधानाय देवाभिमन्त्रविष्णु
र्वेदाभिधायदेवाय स्वाहा विष्णुर्वेदा॥ १ ॥ॐ कपिलाय नमः॥ ॐ उदु विष्णो विक्रमस्व उरुक्षया
य नस्कृधि॥ घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा॥ २ ॥ॐ शेषाय नमः॥ ॐ दिवो
वा विष्णु उत वा पृथिव्या महो वा विष्णु उरोरन्तरिक्षात्। उभा हि हस्ता वसु
ना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णुर्वेदा॥ ३ ॥ॐ गरुडाय नमः॥ ॐ उद्दृष्टे

जानुवद्धनंदिवर्व्वहान्ति कनव्वहाद्दत्ववि ध्वायसूर्ये ॥४॥ ॐ रुलायूपाय २॥ ॐ
सायेर्द्व ब्रीहान्नप्रताया जू स्व धम व धृस्यविश्व पायाशिरू का नंवक्र षिस्कायन
कायपत्रि व स्कान्दिव लोकायधेग्निकानं मूनुउ लोकाय प्रकनिकान ७ सर्व
स्यालोकेस्य ४ उप दुका नमवज्र श्वेव धथापम ६ नाच मू । भ धाय वास ४ प
ध्याग्नीनु प्रकामानयत्री ॥७॥ ॐ मणिरूव नाय २॥ ॐ जूम्भ श्वाहस्ति यंड वाय
श्व यंपूर्ष्ठे ८॥ फाल विर्ज्ञा याविपाल भेउभउयावमि नोयें की नासें की लाल
यसूनाको नमू । नृत्याय गृहस्य ७ रुस ८॥ विरूधमा ध्व कायानुरूग्रा नमू ॥७॥

ॐ नीलपानाय २॥ ॐ शानिपदाविच कामविर्ष्टु ८ भयाजु दालुं । जुष्ध वि:
म्मानि ध्यानयं ॥९॥ ॐ वनरुजाय २॥ ॐ शूँ वकेउजा ॥ ८ ॥ ॐ शून्यपान
य २॥ ॐ स्कन्द वाग्नि स्क दादित्य स्क ब्रह्मस्कन्द चन्द्रमा । स्कन्द वसु रुद्र वृन्द नी
आय ४ सपुजापति स्वाहा ॥ ७॥ ॐ लोकालोकस्या २॥ ॐ अं दृ भूति ॥१०॥
ॐ रु निजाय २॥ ॐ विष्णु कर्म्मा विप ४ श्यति यशाव नानिपस्य ८॥ ॐ नु
स्वयूथ्य सस्वा विष्णुर्य्यु ४ यन मं पदं ॥११॥ ॐ सहस्रनिव २॥ ॐ सह
स्रशीर्षा ॥ १२ ॥ ॐ वृष्णाय २॥ ॐ वृष्णा स्याच धक्षा न्नय त्वाइहै धारा

मिः॥ वृदिवसिवर्द्धिष त्वाइ स्वं थ्रास्वामि वर्द्धिवसि कु ग स्वस्वाइ स्वं थ्रास्वामि ॥ ७ ॥
ॐ यागनि न्द्राय २ ॥ ॐ ग ७० स विद्व र्वल व्यं ए विग्री माह्व भासू मावि विश्व
उत्या । यामस्य कं स्तु अह्वहु वतिपि यानां ० सह सुधानां पयसामर्द्धि गं ॥
१४ ॥ क्षेत्रनकार्द्धिवतुर्द्धे गवंद ॥ ॥ ॐ गायू २ ॥ ॐ श्रीयंग लक्ष्मी ॥
ॐ लक्ष्मी २ ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ हिरण्यवर्ण्णी ॥ ॥ ॐ सूपर्ण्णसि गरुत्मां
ॐ हरु वृहू सि भागायर्जुवक्षे वृहदं थन्त पप श्री क्षोमन्त्री त्मा कुन्दा
० सा गानियाह ० षि नामसामगग नूवामिदं वृं यज्ञाय ज्ञियं पूर्क्ष विष्णु ॥
३ ॐ गरुताय २ ॥

सन्त्र सूपर्ण्णसि गरुत्मां ॐ द्विवंगकु स्वं ४ पन ४ ॥ ७० कि लक्ष्मी आदि
न गरुत्याय वृद ॥ ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ अम्बअम्बिके ॥ ॐ आ नः
नियूद्धि ॥ ॐ घृनघृ नयावान ॥ ॐ उरुपविवनम ॥ कृत्तिपक्षलोकप
व ॥ ॥ ॐ आजिघ्र ॥ कलशया ॥ ॥ ॐ इदं विष्णु ॥ अनन्तकलश
या ॥ ॐ यन्त्रवान ॥ कौमारी ॥ ॥ ॐ नमोब्रह्मणाय ॥ बलि ॥
ॐ गणानां त्वा ॥ गणपति ॥ ॥ ॐ नमास्तुसर्पेभ्यो ॥ नाग ॥ ॥ ॐ
आयंगौ ॥ गोमास ॥ ॥ ॐ वृहस्पत ॥ ॐ अम्बअम्बिके ॥ स्वदेव

ना ॥ ॐ पद्मानन ॥ ॐ पवित्रस्थ ॥ ॐ सुपर्णोपाक्षज न्यआ डि ब्वहसाद्वि
नाग वायव वायस्यनय । पिङ्गला ज्ञान डहानि निरुपण गुल्म एक्ष नदी
पनघया वायू थि वाय ८ कूर्म्म ॥ ॐ असितभा ज स्यादि थ्याउ व्र ज्ञ सित्त गा
गुरुं नवृगन । अ सिसाम नसमया विपृक ८ आहस्न सी निडि विव च्व नानि ॥
ॐ द्या वी द्वि सु स्वाहा ॥ इन्द्रवापि स्वाया ॥ ॥ ॐ आकृष्ण ॥ ॐ जा ना लमिन्द्र ॥
लोकपाल ॥ ॐ ब्राह्म जसपितन ॥ अग्न स्ता मादि ॥ ॐ मयाजागा ॥ पञ्चवक्त्र ॥
ॐ ऊर्द्ध मासा ॥ ॐ नश्च गु स्य ८ स्वाहा ॥ ॐ या ऽ मया ऽ ग ॥ अस्वस्कृ पथा ऽ ध्य ॥ ॐ

अ ऽ न्नुर्य रु ति ॥ ॐ ऽ ऽ ड ऽ न्न पूरु ति ॥ ॐ समच सभासि ॥ ॐ अरु नाडा
य ॥ ॐ ब्राह्मणस्य ॥ ॥ ॐ समित ० सं कल्पथ ० सं प्रिया वा विष्णु सुमन
स्य माभो । ऽ ष मूर्य्य न रि समच सा नो । सम्वासम ना ० सिसमत्तासमू विका
न्नाकर्न । अ ऽ न्न पूजा ष्या नु व विपा रु व ल्वीन ऽ ऽ ष मूर्ज्जी यजमानाय ऽ ध
ति ॥ कुसकनया ॥ ॐ श्री श्च न लक्ष्मी ॥ सिं धुमूदया ॥ ॥ ॐ धूरसि ॥
धूप ॥ ॐ अग्नि ज्योति ॥ दीप ॥ ॐ या ८ फलिनी ॥ फल ॥ ॐ अन्नपत न ॥
ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो ॥ ॐ पय ८ पृथिव्यां ॥ ॐ विष्णु नवाट मसि ॥ ॐ अग्नि

देवता ॥ ॐ श्री ४ शान्ति ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा ॥ ॥ ॐ म
नोजूति ॥ प्रतिष्ठा ॥ ० ॥ गणदेवतमानयेत ॥ ॥ तुलसीकल्पवाक्य ॥ ॐ अ
द्य सकलपापक्षयपूर्वकस्मार्णकसुखप्राप्ति स्वर्गलोकापराङ्गनेकदिव्यवर्ष
सहस्रावच्छिन्नमूलोक्तमहत्फल विष्णुलोकनिवासकामः एकपूजामहं
करिष्ये ॥ ॐ तिर्थतुलसीकल्प ॥ ॥ एकपुष्पमासनं ॥ एकपुष्पमाद्यार्न ॥
एकपुष्पनिवेदिस्थापनं ॥ गन्धसाय ॥ न्यासयाय ॥ ॐ अनन्तायहृदयादि ॥
षडङ्गन्यासः ॥ ॥ ऊर्द्धपात्रस्थापनं ॥ ॐ गंगायमुनायैवति ॥ ॐ प

स्थानम ॥ ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ प्रणीताय २ ॥ ॐ वरूणाय २ ॥ ॐ हृदयाय २ ॥ ॐ शि
रसे २ ॥ ॐ शिखाय २ ॥ ॐ कवचाय २ ॥ ॐ नेत्राय २ ॥ ॐ अस्त्राय २ ॥ ॥
ॐ व्याहृतिषडंग ॥ आवाहनादि बुन्दनार्घपूर्वं २ ॥ धेनुमुद्रां दर्शयेत्
॥ अर्घपात्रेस्थापनं बलिकाय ॥ ॐ उत्तिष्ठ शिरवे गजानन कृष्माण्डपर्वतवासि
नी मरुयानिसमुत्पन्ना मन्त्रगमकगणं ॥ तुलसीनमन्त्रयु ॥ ध्यानं कुर्य
॥ ० ॥ गणाद्यालयपुजनं ॥ ध्यानं ॥ ॐ पूर्वद्वालायनमः ॥ ॐ नन्दिमहाकालाय
य २ ॥ ॐ जयाय २ ॥ ॐ विजयाय २ ॥ ॥ द्वारमध्ये ॥ ॐ वेन्द्राय ॥ ॐ

दक्षिन द्वानाय २ ॥ ॐ आयसंगान नाय २ ॥ ॐ वत्सुय २ ॥ ॐ प्रव ंय २ ॥
द्वान मध्ये ॥ ॐ नवानाय २ ॥ ॐ पश्चिमद्वानाय २ ॥ ॐ गीयगान नाय २ ॥
ॐ धात्री २ ॥ ॐ विधात्री २ ॥ ॥ द्वानमध्ये ॥ ॐ कपिलाय २ ॥ ॐ उत्तर द्वाना
य २ ॥ ॐ ह म गान नाय २ ॥ ॐ विघ्नक्षनाय २ ॥ ॐ क्षेत्रपानाय २ ॥ ॥ द्वानम
ध्ये ॥ ॐ नरसिंहाय २ ॥ ॐ गणपतये २ ॥ ॐ गुरुभ्य २ ॥ ॐ यागिनीभ्य २
॥ ॐ क्षेत्रपालाय २ ॥ ० ॥ मध्यपूजनं ॥ ॐ श्री नार्दुवाय २ ॥ ॐ श्री नार्दुवाय
२ ॥ ॐ आधानगक्तय २ ॥ ॐ अनन्तासनाय २ ॥ ॐ स्कन्दाय २ ॥ ॐ नानाय २ ॥

ॐ पद्माय २ ॥ ॐ पद्माय २ ॥ ॐ कं ण नाय २ ॥ ॐ कर्णिकाय २ ॥ ॥ ॐ ध
र्माय २ ॥ ॐ ज्ञानाय २ ॥ ॐ वैनाज्ञानाय २ ॥ ॐ अनश्वर्याय २ ॥ ॐ अधर्मा
य २ ॥ ॐ अज्ञानाय २ ॥ ॐ अवैनाज्ञानाय २ ॥ ॐ अनस्वर्याय २ ॥ ॐ गरुडा
सनाय २ ॥ ॐ हृदयायनम ॥ ॐ शिर २ ॥ ॐ शिखाय २ ॥ ॐ कवचाय
२ ॥ ॐ नत्राय २ ॥ ॐ अस्त्राय २ ॥ ॥ आवाहन अर्घ्य पाद्य आचमनीयं नम
नीयार्घ स्वाहा चन्दनाक्षत पुष्पं नमः ॥ आवाहन ॥ येन त अरुन स्वा
नलीयजान ॥ ॐ आगच्छ देवदेवश अनन्तस पूजितं । सानि ध्ये कु

नुनाप्र्यस पूजार्थं कल्पयाम्यहं ॥ मूलमन्त्रेन आवाहयेत् ॥ ॥ पाद्यार्घव
क ॥ ॐ आगच्छ भगवन्देव गजानालिङ्गत्पन । गृहानार्घमयापर्न ॐ
नमाय नमाम नमः ॥ स्नान तीर्थजलं वाक्य ॥ ॐ अनन्त गुणवस्तानि विश्वरूप
धनाय च ८ । नमामस्ते महदेवाय ॐ नमायनमा नमः ॥ आचमन तीर्थजलं ॥
ॐ नारायण नमस्कृत्य गर्भिमीर्न वसागरात्रे लोकव्यापिकानन्द ग्रा
हि मीमधुसूदन ॥ ॥ दस्मार्घ केवलस्व जान ॥ वाक्य ॥ ॐ जल आयमद्दत्ता
य जलजोपायसंक्षिप्ना जलनाथि स्वरूपाय दस्मार्घ कल्पयाम्यहं ॥ वस्त्र

ॐ जलर्थपट्टवानं विचित्रवस्त्रसारितं । कर्पासदिमिदं वस्त्रं सु
गृहितं मकुर्य ॥ ॥ गन्धध्यान ॥ स्नानस्य अन ॐ कुनन कवचन्दन
वम ॥ ॐ कुसुम स फाल्गुनानन्द यपिवरुधुवं । ददि दोष
क मधुर्भ । संस्वमपक नेत्रथा वद्ध मुद्रस्य थवाम नेदाडयायय च नमः ८
ॐ नन्द ध्यानन पर्व कथितं वद्धा विरुनं ॥ दवनव नुमनकाय वि
नीतिमूकु ठाकुलं श्रीवत्सकौस्तुभं ह्वं वनमालाविभूषितं ॥ ॐ नका
य ॐ नन्द मूर्त्तय ध्यान पूज्या नमः ८ ॥ ॥ पूनः थाः थ थवगे ध्यान ॥ ॥ न

ना प्रार्थना ॥ कस्थानजाप्न ॥ ॐ अनन्त सर्व्वेशवानां मनन्ता रुगवान्दवि ।
ष्णुयानन्त रूपलक्ष्यापि ममजीवषूजन्मनि ॥ ॥ प्रियाञ्जलि ॥ कस्थानजाप
॥ ॐ अनन्त ध्यनमस्तुते नम ४ स्कन्दलसायिन । धर्मार्थकाममोक्षानां
प्रीयतोंभरियाञ्जलिः ॥ ० ॥ नमानन्तपूजनं ॥ ॐ अनन्तायनम ॥ ॐ वै
कुण्ठाय २ ॥ ॐ वनोहाय २ ॥ ॐ कपिलाय २ ॥ ॐ नरसिंहाय २ ॥ ॐ कृष्णद्रुम्ना
य २ ॥ ॐ नारायणाय २ ॥ ॐ द्वापरयुगाय २ ॥ ॐ कलियुगाय २ ॥ ॐ नाराय
णाय २ ॥ ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ रामाय २ ॥ ॐ दामोदराय २ ॥ ॐ अनन्तायकृष्णा क

णमूर्त्तये २ ॥ ॐ अनन्ताववासुदेवाय वासुकीमूर्त्तये २ ॥ ॐ मधुसूदनाय न
रुकमूर्त्तये २ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय कर्कोटकमूर्त्तये २ ॥ ॐ वामनाय पद्ममूर्त्ति
ये २ ॥ ॐ श्रीधराय महापद्ममूर्त्तये २ ॥ ॐ हृषीकेशाय शंखपालमूर्त्ति
ये २ ॥ ॐ पद्मनाभाय कुलिकमूर्त्तये २ ॥ ॥ यदमूर्त्ति ॥ ॥ ॐ ब्रह्मणे
२ ॥ ॐ नारायणाय २ ॥ ॐ सत्वाय २ ॥ ॐ सर्व्वव्यापीने २ ॥ ॐ विश्वनाय २ ॥
ॐ विश्वरूपाय २ ॥ ॐ महाकालाय २ ॥ ॐ सृष्टिसंहाराय २ ॥ ॐ अनन्ताय २ ॥
ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ पद्मनाभाय २ ॥ ॐ केशवाय २ ॥ ॐ नरसिंहाय २ ॥

वामनाय २॥ ॐ त्रिभुवननाथाय २॥ ॥ इति चतुर्द्दशभुवनाधिपतिमूर्त्ति ॥ १०॥
ॐ श्रीनारायणाय मत्स्यमूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय कूर्म्ममूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय वाराह
मूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय नरसिंहमूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय वामनमूर्त्तये २॥
ॐ श्रीनारायणाय परशुराममूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय राममूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय कृ
ष्णमूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय बुद्धमूर्त्तये २॥ ॐ श्रीनारायणाय कल्किमूर्त्तये २॥ ॥
इति दशावतार ॥ ॥ ॐ केशवाय श्रीलक्ष्मी २॥ ॐ नारायणाय आत्मवाग्भवानी
सरस्वत्यै २॥ ॐ माधवाय कान्तिप्रियायै २॥ ॐ गोविन्दाय क्रियायै कान्तायै २ ॥

ॐ विष्णवे दाक्षायै २॥ ॐ मधुसूदनाय प्रीति वै प्रीति २॥ ॐ त्रिविक्र
माय श्रद्धायै ऊति श्रद्धायै २॥ ॐ वामनाय श्री अतिप्रीत्यै २॥ ॐ श्रीधरा
य नमो य धृत्यै २॥ ॐ हृषीकेशाय मायायै मायायै २॥ ॐ पद्मनाभाय
भामनाय धर्म्मनाय २॥ ॐ दामोदराय महिमायै महिमायै २॥ ॐ पुरुषोत्तमा
य लक्ष्मीदेव्यै २॥ ॥ इति द्वादशमूर्त्ति ॥ ॥ ॐ इन्द्राय २॥ ॐ अग्नये २॥
ॐ यमाय २॥ ॐ नैरृत्याय २॥ ॐ वरुणाय २॥ ॐ वायवे २॥ ॐ कुबेराय
२॥ ॐ ईशानाय २॥ ॐ ऊर्द्ध्वब्रह्मणे २॥ ॐ अधोऽनन्ताय २॥ ॐ श्रीनारायणाय

चतुर्द्दश... ॥ ॐ कृतिजनकादिचतुर्द्दशमूर्त्ति ॥ ॥ आचमनपूर्व्वकं ॐ क
वनीयं चमनियार्घ्यं स्वाहा चन्दनाकलनपूर्व्वं ४॥ ॥ चन्दनवाक ॥ ॐ श्रीखण्डं
चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरं। विलेपनं कुरु श्रेष्ठं प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यतां ॥
गन्धचन्दन ॥ ॐ मलयादिसमुत्पन्नं गन्धाढ्यं सुमनोहरं। मयाविनिवेदितं गन्धं
गृहाण परमेश्वर ४॥ ॥ अक्षत ॥ ॐ अक्षतंतु नैवेद्यं सर्व्वकामवरप्रदं। न
मुक्तं देवदेवेशं गृहाण परमेश्वर ४॥ ॥ सिन्दूर ॥ ॐ नानाकिननवश्रा
सिन्दूरं गात्रशोभनं। प्रनीतःसर्व्वलोकेश प्रभुत्वं फलसिद्धय ॥ ॥ धीयाउ

आमका ॥ ॐ कामाद्रचमनं नस्तु आदिमां नवसागनादि। वक्षःस्थलन्तु नायश्री
गृहाण पूर्णमालकर्म ॥ ॥ मालस्नान ॥ ॐ विचित्र४पुष्पमालाच दूरमामालि
कानि च। संपूज्य विविधं अक्षा गृहाण मधुसूदन ४॥ ॥ नस्नान ॥ ॐ ना
सत्वं रगषधवस्तु सर्व्वव्यापि चमीश्वरं। विश्वरूपमहाकारं गृहि सन्नान
कारिणं। अनन्त विष्णु जवं च पद्मनाभं च केशवं नरसिंहपुरंदरं वा
वनं त्रिभुवनाधिपं ॐ इदं पुष्पं मयादत्तं। भक्तिं नमश्चतुर्द्दश गृहाण देव
ऋषयि। प्रीताभव त्वनन्तकं ॥ ॥ वन ॥ ॐ कंदर्पसमसंजातं प्रविर

दमनं तु रं । दक्षनं प्राप्यतं देवं मा भाङ्ग सर्व्वकामदं ॥ ॥ उलगा ॥ ॐ गंगास्ना
नषूयन्तु लं सर्व्वतीर्थषूय स्त लं । वासुदेवप्रियनित्यं ॥ उलग्गी सान्यमा रदु
॥ ॥ श्री अनन्तपूजा ॥ ❀ ॥ नवाअनन्तकलशपूजनं ॥ ॐ ब्रह्मणे २ ॥ ॐ
रुद्राय २ ॥ ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ [illegible]नाय २ ॥ ॐ सदाशिवाय २ ॥ ॐ गंगायै २ ॥ ॐ
यमुनायै ॥ ॐ नर्म्मदाय २ ॥ ॐ कावेर्यै २ ॥ ॐ सनयू २ ॥ ॐ सनस्वत्यै २ ॥ ॐ गो
मत्यै २ ॥ ॐ गन्धवत्यै २ ॥ ॐ कौशिक्यै २ ॥ ॐ वामत्यै २ ॥ ॐ चन्द्रभागाय २ ॥ ॐ
पुण्डरीकाय २ ॥ ॐ देवसूदनाय २ ॥ ॐ दामोदराय २ ॥ ॐ पद्मनाभाय २ ॥

ॐ केशवाय २ ॥ ॐ गरुडध्वजाय २ ॥ ॐ गोविन्दाय २ ॥ ॐ विश्वक्सेन २ ॥ ॐ
कृष्णाय २ ॥ ॐ हृदयाय नम ॥ त्यादि ॥ ॥ आवाहन उवंवु [illegible] केन नीया
र्घ स्वीहाय चन्दनाक्षतपुष्पं २ ॥ ॥ उउमको ॥ ॐ दामोदर नमन नमोस्तु ॥
मालस्नान ॥ ॐ विचित्रपुष्पमाला च ॥ ॥ श्री अनन्तकलशपूजा ॥ ॥
नवामृतपूर्णकलशपूजनं ॥ ॥ ॐ ब्रह्मणे २ ॥ ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ सदाशि
वाय २ ॥ ॐ गंगाय २ ॥ ॐ यमुनाय २ ॥ ॐ सनस्वत्यै २ ॥ ॐ गन्धवत्यै २ ॥ ॐ
कौशिक्यै २ ॥ ॐ चन्द्रभागाय २ ॥ ॐ मार्कण्डाय २ ॥ ॐ कश्यपाय २ ॥ ॐ वसि

श्याय २ ॥ ॐ व्यासाय २ ॥ ॐ गौतमाय २ ॥ ॐ शानव्याजाय २ ॥ ॐ जमदग्नये २
ॐ आङ्गिराय २ ॥ ॐ सामाय २ ॥ ॐ धूमनाय २ ॥ ॐ दूर्वाय २ ॥ ॐ वृहस्पत
य २ ॥ ॐ शुक्राय २ ॥ ॐ मानिध्यवाय २ ॥ ॐ नारद २ ॥ ॐ कपिल २ ॥ ॐ ज
मन २ ॥ ॐ आदित्यादिनवग्रहेभ्यो २ ॥ ॐ अगस्त्यमाय २ ॥ ॐ वनदेव २ ॥ ॐ
व्यासाय २ ॥ ॐ हनूमन्ताय २ ॥ ॐ त्रिलोचनाय २ ॥ ॐ कृपाय २ ॥ ॐ परशुरा
माय २ ॥ ॐ मार्कण्डेयाय २ ॥ ॐ सप्तऋषिकुलनायकपूजाय २ ॥ ॥ उत्तम
की ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्र

तिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ ॥ मालस्नान ॥ ॐ विचित्रपुष्पमाला
य ॥ ॥ पुष्प धूपादि ॥ ॐ नित्य कलश पूजा ॥ ॥ नागासनपूजनं ॥ ॐ अनन्ता
य २ ॥ ॐ वासुकी २ ॥ ॐ तक्षकाय २ ॥ ॐ कर्कोटकाय २ ॥ ॐ पद्माय २
ॐ महापद्माय २ ॥ ॐ शंखपालाय २ ॥ ॐ कुलिकाय २ ॥ ॐ अष्टकुलना
गनागराजायभ्यो २ ॥ ॐ ज्ञानाण्डवाय २ ॥ ॐ नीलाण्डवाय २ ॥ ॐ देवदत्तनाय
२ ॥ ॐ घृतस्वादाय २ ॥ ॐ पूर्णभद्रकाय २ ॥ ॐ इक्षुस्वादाय २ ॥ ॐ सिंधू
व २ ॥ ॐ सागराय २ ॥ ॐ महाहृदयाय २ ॥ ॐ अनन्तादिनवनागराजेभ्यो २ ॥

ॐ हृदयाय२ ६ ॥आवाहनादि॥ ॥वाद्य जजमका ॥ॐ दामादरमनस्तु॥
मालस्वान वादू ॥ॐ विचित्रपुष्पमालाय॥ ॥अतगन्धादि॥ ॥सिनगनपूजा॥ ॥
गणवलिपूजन ॥ॐ श्मसानक्षेत्रपालाय२॥ॐ नरसिंह महाभैरवाय२॥ॐ
कुलाङ्कुक भैरवाय२॥ॐ नयाधवज्रनादवीर२॥ॐ प्रियाङ्गमाहस्वनीरवी
२॥ॐ लङ्काया वाद्यनाद्यवीर२॥ॐ असिताङ्ग भैरवाय२॥ॐ रुरु भैरवाय२॥
ॐ चण्ड भैरवाय२॥ॐ क्रोध भैरवाय२॥ॐ उन्मत्त भैरवाय२॥ॐ कपालि
भैरवाय२॥ॐ भीषण भैरवाय२॥ॐ संहार भैरवाय२॥ॐ वातुन भैरवा

य२॥ॐ असिताङ्गादि भैरवाय२॥ॐ ब्रह्मायादि माहगणेश्वार२॥ॐ सर्वभूत
यालस्वा२॥ॐ हृदयाय२ ६॥ ॥आवाहनादि॥ ॥वाद्य जजमका॥ ॐ दा
मादरमनस्तु॥ ॥मालस्वानवादू॥ॐ विचित्र४पुष्पमालाय॥ अतगन्धा
दि॥सिनवलिपूजा॥ ॥गणगणपतिपूजन॥ॐ गणपतये२॥ॐ हे
रम्बाय२॥ॐ विघ्नराजाय२॥ॐ लम्बोदराय२॥ॐ एकदन्ताय२॥ॐ हे
रम्बाय२॥ॐ गणपति मूर्तये२॥ॐ हृदयाय२ ६॥आवाहनादि॥ ॥वाद्य
जजमका॥ॐ दामादरमनस्तु॥ ॥माल्यस्वान॥ ॐ विचित्रपुष्पमालाय॥

जूतगन्धादि ॥ इति गणपति पूजा ॥ ॥ नमः कौमारीपूजनं ॥ ॐ ब्रह्मायणी २ ॥
ॐ माहेश्वरी २ ॥ ॐ कौमारी २ ॥ ॐ वैष्णवी २ ॥ ॐ वाराही २ ॥ ॐ इन्द्रायणी २ ॥
ॐ चामुण्डाय २ ॥ ॐ महालक्ष्मी २ ॥ ॐ कौमारीमूर्त्तये २ ॥ ॐ हृदयाय २३ ॥ आ
हनादि ॥ खाद्यूजजमका ॥ ॐ दाभाद्रव मननकस्तु ॥ खाद्यस्नान ॥ ॐ विचित्रपु
ष्पमालाय ॥ ॥ जूतगन्धादि ॥ इति कौमारीपूजा ॥ ॥ नमः क्षेत्रपालपूज
नं ॥ ॐ नन्दाय २ ॥ ॐ रुद्राय २ ॥ ॐ गुरुरुद्राय २ ॥ ॐ क्षेत्रनाथ २ ॥ ॐ धुमनाग
२ ॥ ॐ गणपतये २ क्षौर्ये २ ॥ ॐ विष्णु वसुदाशिवाय २ ॥ ॐ कपिचादिपञ्चसोम

हकस्याय २ ॥ ॥ ॐ हृदयाय २३ ॥ आवाहनादि ॥ खयूजजमका ॥ ॐ दाभाद्रव
मननकस्तु ॥ खयूमाव स्नान ॥ ॐ विचित्रपुष्पमालाय ॥ जूतगन्धादि ॥ इति क्षे
त्रपूजा ॥ ॥ नमः इस्वापिंस्वापूजनं ॥ ॐ वह्निहालीमाय २ ॥ ॐ आनन्दवर्ण
य २ ॥ ॐ कुलदेवताय २ ॥ ॐ हृदयाय २३ ॥ आवाहन ब्रह्मकरनीयवमनि
यन्त्र स्वाहा चन्द्रनारायणपूर्षि २ ॥ ॥ क्षौयाजजमका ॥ ॐ दाभाद्रव मननकस्तु ॥
क्षौयाव स्नान ॥ ॐ विचित्रपुष्पमालाय ॥ जूतगन्धादि ॥ इति इस्वापिंस्वापूजा ॥
॥ ० ॥ देवसाक्षीया मन्त्र ॥ ॐ अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव ।

अनन्तरूपविनिर्थातयश्च अनन्तरूपाय नमो नमस्ते ॥ ॥ दीपार्पन ॥ ॐ अन
न्तर्नैवेद्य सुर्व्वदीपवनप्रदं । तदर्थं गृह्णन्तु देवेश अनन्ताय नमोस्तुते ॥ ॥ दी
यादाम्भल ॥ ॐ पुष्पदस्ति उसन्दस्ति । श्रीनामान्दस्ति वासुदेवं । पुष्पदस्ति प
न्दस्ति पुष्पगन्धन नमोस्तुते ॥ ॥ पद्मपुष्प ॥ ॐ पद्मपुष्पानि सर्वानि स
र्वदिग्विभूषणासनं । चक्रवल्लीपदं दद्यं अनन्तप्रीयतां तवप्रभु ॥ ॥ उत्प
ल ॥ ॐ उत्पलं हिमयादन्तं सर्व्वपुष्पपूजाक्रमं । लक्ष्मीसौभाग्यदस्ति गृह्ण
न्तु चक्रपाणिनं ॥ ॥ जीनिस्वान ॥ ॐ महावीजवनायानि पुष्पजातिसुगंधिनी

नानागन्धसुगन्धाया जातिपुष्पप्रतिगृह्णतां ॥ ॥ फल ॥ ॐ पनस कतलि
जम्बु नाल जाम्बीन घाफल नारिकेल नक्षस्व द्रुंनी । दाडिमं वीजपूरकं वद
रीवृन्तदशानि मदनीच्चवस्तु दृष्टं ॥ ॥ गोयाध्वाल ॥ ॐ गुवाक नागवल्लीयु
क्तं वद्धभाद्रलरूपनं । गृहाननं वदवेश प्रियताम्बूलमुत्तमं ॥ ॥ नै
वेद्य ॥ ॐ नैवेद्यं गृह्णतां देव तक्तिमपूर्वनीवेद्य । ... सुफलं दस्ति
वसंख्यपनाशहिं ॥ ॥ पक्वान्न ॥ ॐ संतर्व सवकूटपुनः घृतनपाचपक्वा
न्न । तण्डुलासहितं गृह्ण पक्वान्नं गृह्णतां प्रभु । ॥ धूपार्पण ॥ ॐ व

नस्त्रयुक्तं वस्त्रं देव नानागन्धसमाकुलं ॥ आच्छादनं सर्व्वदेवानी प्रीत्यर्थं प्रति

गृह्यतां ॥ ॥ दीपाविहितनमस्त्रस्य ॥ ॐ आज्यं पूर्व्वहितकार्यूक्तं वह्निनाजो

जितं प्रियं। गृहानदीपनं देवं त्रैलोक्यतमनासनं ॥ ॥ धनमाहनीदे

वाय ॥ ॥ पुनश्चमन्थ्यपूजनं ॥ ॥ ॐ दक्षिनपादकस्याः २ ॥ ॐ वामपादक

स्याः २ ॥ ॐ दक्षिणहस्तजाय २ ॥ ॐ वामहस्तजाय २ ॥ ॐ शंखाय २ ॥ ॐ चक्राय २ ॥

ॐ गदाय २ ॥ ॐ पद्माय २ ॥ ॐ वासुदेवाय २ ॥ ॐ संकर्षनाय २ ॥ ॐ प्रद्युम्ना

य २ ॥ ॐ अनिरुद्धाय २ ॐ पुरुषोत्तमाय २ ॥ ॐ अच्युताय २ ॥ ॐ नरसिंहाय २ ॥ ॐ

वलभद्राय २ ॥ ॐ वसुदेवाय २ ॥ ॐ देवक्यै २ ॥ ॐ नन्दगोपाय २ ॥ ॐ उ

सादाय २ ॥ ॐ सुमन्त्राय २ ॥ ॐ दारुकाय २ ॥ ॐ कर्कटाय २ ॥ ॐ कौण्डिल्याय २ ॥

ॐ शीलाय २ ॥ ॐ ग्रामदेवताय २ ॥ ॥ शक्तिपूजनं ॥ ॥ नमोऽनन्तकप्रार्थनं

वाक्य ॥ ॐ अनन्त कामयं देवं सर्व्वकामफलप्रदं। अनन्तडोर सूत्रं पुत्रपौ

त्रवर्द्धयेन ॥ ॥ डोरकग्रहणवाक्य ॥ ॐ अनन्तं प्रतिगृह्णामि अनन्तं वेदरूप

निवः अनन्तं नाम्ना सखा अनन्ताय नमोस्तु ते ॥ ॥ डोरकबन्धनमन्त्र ॥

ॐ अनन्तसंसारमहासमुद्र मग्नासमभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपविनि
योजय स्व अनन्तरूपाय नमो नमस्ते ॥ चतुर्द्दशवार्त्त ॥ ॥ आलक बन्धन
वाक्य ॥ ॐ महतादिजगत् सृष्टं भुवनानि चतुर्द्दश। धर्म्मार्थकाममोक्षानां स्वक
र्म्मप्रयामहे ॥ ॐ ससागरगह्वरगुहा गुरु सूर्यविराजं वर्द्धितं भक्तलक्षणाढ्य
सूत्र सत्वा। संपूज्य त्रिभुवन समनन्तदेवं वर्द्धितं दक्षिनकरबन्धनाल
कं च ॥ एतत् पठित्वा दक्षिनभुजे बन्धयेत् पुरुष। स्त्री वामभुजे बन्धयेत् ॥
॥ पूर्व आलक बन्धनाङ्गं बन्धयेत् समर्प्य थ वाक्य ॥ ॐ नमोस्तु देवदेवाय

विश्वरूपधराय च। सृष्टिस्थितिसंहाराय विश्वरूप नमोस्तु ते ॥ ॥ पुन
नवग्रह सनक्षत्र ॥ ॥ पुनः मध्ये पूजनं ॥ ॐ आदित्यादिनवग्रहेभ्यो २ ॥
ॐ कृत्तिकाय २ ॥ ॐ रोहिण्यै २ ॥ ॐ मृगशिरायै २ ॥ ॐ आर्द्राय २ ॥ ॐ पुन
र्वसवे २ ॥ ॐ पुष्याय २ ॥ ॐ अश्लेषाय २ ॥ ॐ मघाय २ ॥ ॐ पूर्वफाल्गुण्यै २ ॥
ॐ उत्तरफाल्गुण्यै २ ॥ ॐ हस्ताय २ ॥ ॐ चित्राय २ ॥ ॐ स्वात्यै २ ॥ ॐ वि
शाखाय २ ॥ ॐ अनुराधाय २ ॥ ॐ ज्येष्ठाय २ ॥ ॐ मूलाय २ ॥ ॐ पूर्वाषाढा
य २ ॥ ॐ उत्तराषाढाय २ ॥ ॐ अभिजितै २ ॥ ॐ श्रवनाय २ ॥ ॐ धनिष्ठाय २ ॥

ॐ शतभिषाय २॥ ॐ पूर्व्वभद्राय २॥ ॐ उत्तरभद्राय २॥ ॐ रेवत्यै २॥ ॐ अश्वि
न्यै २॥ ॐ भरन्यै २॥ ॐ कृत्तिकादिनक्षत्रेभ्यो २॥ ॥ ॐ विष्कम्भाय २॥ ॐ
प्रीतय २॥ ॐ आयुष्मानाय २॥ ॐ सोभाग्याय २॥ ॐ सोभनाय २॥ ॐ अतिग
ण्डाय २॥ ॐ सुकर्मानाय २॥ ॐ धृतय २॥ ॐ शूलाय २॥ ॐ गण्डाय २॥ ॐ वृद्ध
य २॥ ॐ ध्रुवाय २॥ ॐ व्याघातय २॥ ॐ हर्षनाय २ ॥ ॐ वज्राय २॥ ॐ सिद्ध
य २॥ ॐ व्यतिपाताय २॥ ॐ वरियानाय २॥ ॐ परिघाय २॥ ॐ शिवाय २॥ ॐ
सिद्धय २॥ ॐ साध्याय २॥ ॐ शुभाय २॥ ॐ शुक्लाय २॥ ॐ ब्रह्मणे २॥ ॐ ऐन्द्रा

य २॥ ॐ वैधृतय २ ॥ ॐ विष्कम्भादियोगेभ्यो २॥ ॥ ॐ मेषादिद्वादश
राशिभ्यो २॥ ॐ वृषाय २॥ ॐ मिथुनाय २॥ ॐ कर्क्कटाय २॥ ॐ सिंहाय २॥ ॐ क
न्याय २॥ ॐ तुलाय २॥ ॐ विश्चकाय २॥ ॐ धनुषे २॥ ॐ मकराय २॥ ॐ कुम्भाय
२॥ ॐ मिनाय २॥ ॐ मेषादिद्वादशराशिभ्यो २॥ ॥ ॐ प्रतिपदाय २॥
ॐ द्वितियाय २॥ ॐ तृतीयाय २॥ ॐ चतुर्थीय २॥ ॐ पंचमी २॥ ॐ षष्टमी २॥
ॐ सप्तमी २॥ ॐ अष्टमी २॥ ॐ नवमी २॥ ॐ दशमी २॥ ॐ एकादशी २॥
ॐ द्वादशी २॥ ॐ त्रयोदशी २॥ ॐ चतुर्दशी २॥ ॐ पूर्णमासी २॥ ॐ अमा:।

॥२॥ ॐ प्रतिप्रद्यादि तिथि स्वाहा२॥ ॥ ॐ अस्वत्थामादि भृद्वीलं डीव स्वाहा२॥
आवाहनादि॥ ॥ जजमका॥ ॐ दाभाद्वमनकतु॥ ॥ मालायूथा४॥ ॐ विचि
त्र [illegible]या मालाच॥ ॥ अत गन्धादि॥ ० ॥ नगाअर्घ्य॥ चन्दनाक्षतपुष्प संस्वस
न॥ अर्घ्यसम॥ ॐ अद्य वालाक्षकार्य्य यादि॥ ॐ अद्य दि॥ यजमानस्य अनना
व्रतनिमित्यर्थं इदमर्घ्यं गृहान स्वाहा॥ ॐ आपे क्षीनक्षगाग्रानि सिद्धार्थ
दधिकुशस्तथा। गंखणाय समादाय सपुष्पफलचन्दनं। जानुभ्यां धरणीं कृत्वा
अर्घ्यायाञ्जनिवेदयत्॥ ॐ नमस्ते देवदेवेस नमस्ते विश्वभूपिने। नमस्ते

कदेवाय गृहानार्घ्यं सुरेश्वर४॥ ॐ आयुवृद्धिर्यशोवृद्धि वृद्धिप्रज्ञास
षस्रीया धर्म्मसन्तानवृद्धमु संतुभसफवृद्धय॥ इति अर्घ्य॥ ॥ संस्वन
मस्कारं॥ ० ॥ नगाप्रतिष्ठा॥ ॐ मनोजूति॥ ॥ जैय स्तोत्र॥ मथुतु
॥ जायज्ञनकया मूलमन्त्रेन॥ स्तोत्र ५०७॥ ॐ नमाभ नमाय३॥ उदु
त्यनिस्कितिलयरुनवद्व स्यकल्या४ स त्वाद्या४ प्रकृति गुय गदयासन्। चा[illegible]
र्पक्कवमकर्नयदृक जात्मा नाना पालथमुद्रनस्यावद्ववर्त्ती॥ १॥ मूर्तिन४पद्
कृपयावताल सर्वं संसुद्ध सदयछिद्रं विनाशयत। यक्षि नामयति नाद्वव

न्त्या४ मायातुं स्वजनमनसा स्वचानवार्य्यो ॥ यन्नाम ... मिमनुकाङ्क्षियदकस्मा ७ ॥
कालावा यदिपतितः४ युलम्बना ह्राकृयाग । सपदिनु धामगेषचर्नी कं ग यान
तगवतु ॥ आगु यमुमूतः४ मृत्यु न्यापिनम नुबद्ध सहस्रमूर्द्ध नगानसगिविगि
विसमूहस र्त्त ॥ ज्ञानन्द्यं दनिमिगविक्रमयस्य रुम्म४ । काविद्या यिगुणयं सदृ सुडि
द्धि ॥ तदेव प्रभावात्त्वर्वानन्त ॥ द्रुचक्रि धीयीनु गुणनु ताव । मूनल सायन्नि नम
त्मनन्तथानिवु यालक्ष्म्याक्तिनयविनुक्ति ॥ ७ ॥ इति श्री भगवत श्री अनन्त स्तव स
माप्त ॥ ॥ ॐ नमो अनन्ताय ॥ ॐ निर्विघ्न विघ्नान्तक द्विनान्तकाय ॥ ध्यानाभिध्यायव प्रस
यानन्तकाय । ज्ञानात्तर्वयुः४ यचमात्मथाना तस्मै नमो नन्तसूर्व प्रदाय ॥ १ ॥ नमो
स्तुनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्र पादाक्षि शिरोरू बाहवे । सहस्र नाम्न पुरुषाय
शाश्वते सहस्र कोटी युग धारिने नमः४ ॥ २ ॥ ज्ञसाव संसार विनाशाय नाय स
र्वात्मने सर्व गुण संप्रदाय । नमोस्तु नन्ताय त्वमेव नाय त्रैलोक्यनाथाय वरप्र
दाय ॥ ३ ॥ अनन्तरूपेण विराजितेये ध्वि अनन्त लक्ष्मी विदधासि तुभ्यं अन
न्त ज्ञानप्रद दानि ... लोके अनन्त रूप क्रमभयप्रदोह ॥ ४ ॥ नमो नमः४ क
रुणा वामनाय नारायणाया मितविक्रमाय । श्री शङ्ख चक्रासि गदाधराय

नमोऽस्तु तस्मै पूष्पार्कमाय ॥५॥ सुखाय चन्द्रनिलयाय महाधनाय। सिंहाय
ध्वनिधनाय चतुर्भुजाय। वज्रान्दुविष्णुमुनिवानरसंस्तुताय॥ देवाकमा
ष्टवरदाय नमोऽस्तु तस्मै ॥६॥ नागेन्द्रनागसयनासनसुप्रियाय॥ लोकेश्वरे
न्द्रमसृक्नीलपद्मनायमाय। पीताम्बराय मधुकैटभनाशनाय॥ राधि
प्रियाय वरदाय सुदर्शनाय ॥७॥ नारीकुंजानकमलकुचतुर्म्मुखाय॥ देवे
शीवादकरुणुवनिकतनरलोपिनाय। नानाविचित्रमुकुटाङ्गदकुण्डलाय॥ सर्व
स्वदायवरदाय नमोऽस्तु तस्मै ॥८॥ विश्वात्मनेपरमकारणवामनाय॥ कूज्ञान
विन्दकमलायतलोचनाय। देवेन्द्रदनवपनार्चितपादुकाय॥ योगेश्वराय वि
दितायनमोऽस्तु तस्मै ॥९॥ लोकायनायत्रिदशायनाय॥ ब्रह्माय आत्मनवाय
नाय॥ धर्म्मायनायकरुणालयनाय॥ महाबलायसदानन्दश्री॥ ॥१०॥ अ
चिन्त्यमव्यक्तमनन्तमच्युतं॥ नारायणं कारणमादिदेवं॥ यूयं क्षेत्रपु
रुषं पुराणं॥ तं वासुदेवं शरणं प्रपद्ये ॥११॥ ऊर्द्ध्वस्यमञ्चयमनाभिमध्ये॥
सहषड्विश्वावृक्षविदःसूयर्णो। वदन्ति यं वै पुरुषं पुराणं॥ तं वासु
देवं शरणं प्रपद्ये ॥१२॥ विचित्रकायूरमहारुनिष्क॥ वनमाल

कृतसर्व्वेगार्ण । पीताम्बरकरोत्र गदशक्तिविर्ने मालाधरं केशवमत्युपात ॥ ३ ॥
तेवहृर्वं वरदविदीवविर्न्ते आगात्मार्ज सांख्यविदां वविहूं । आदित्यचन्द्राग्नि
वप्रत्त्वं प्रदुंपपथ्यच्युन मात्महर्त ॥ १४ ॥ ॥ अनन्तकलसयार्न ॥ ॐ
अनन्तायनम सुर्धं भुक्तिमुक्तिप्रदायच । निर्भरखार्नकर्मूपाय शक्तिसंसार
बाच १८ ॥ ॥ मृत्युञ्जयकलशयार्न ॥ ॐ मूर्त्तिस्त्वं देवतानां सकलसु-
रनदीनां तीर्थगंगादिनाथे ८ पूर्ज्जुनलोषधीनि ८ कलद्रुसुमरुभ ८ कुसु
मलत्ववंन । विघ्नानां ध्वंसहेतु ८ कलुषविषहरे सर्व्वयेन्द्रप्रणम्ये

दुर्वंद्रुममूर्त्ति शिवशकलमयं मंगलंमागलानां ॥ ॥ सर्पयार्न ॥
ॐ अनन्तायनमस्करु वासुकि गद्र कायवा कर्कोटकपद्म स्व महापद्म
नमास्तुभ ॥ सर्वपालनमस्करु कुलिकायनमानम ८ मध्यंवरुणनागा
नागराजायनम ॥ ॥ वलियार्न ॥ ॐ निर्वानं स्वाहि ॥ ॥ गणपतिर्न ॥
ॐ देवमप्यपवर्म स्वाहि ॥ ॥ कौमारीस्तुं ॥ ॐ रक्तासिंदूलवर्णं नपिनद्
कि निता शक्तिकान्तिसुन्दरा । कौमारीवालरूपिप्रहसितवदनाह्वषि
तास्वनर्क १० । ॐ क्रासिद्धिप्रदानाद्विनयहनासर्व्वकर्मपिणं

स्का॥ सादेवी आदि शक्ति वसुलक्ष्मी लब्ध दासीय शुभ कन्यारी॥ ॥ श्री अस्तयाः॥
ॐ नमोस्तु कपिलदेवी। नमोस्तु गुरु पूजितेनं। पवित्रं सर्व देहानां। पूजितं कृष्ण नमो
स्तुते॥ ॥ इति स्वापिता॥ ॐ ह्रीं देवनमस्तुते॥ ॥ शुभाय १०७ ॥ ॐ अनन्त
गुण रत्नानि। विश्वरूप धराय च। नमो महात्म्य देहाय। अनन्ताय नमो नमः॥ १॥
नमो लोकहितार्थाय। नमः पापहराय च। नमः संसारसाराय। नमः स्तो
त्र मायिने॥ २॥ अनन्ताय नमः स्तुत्यं भुक्तिमुक्तिप्रदाय च। निर्मलीनकरू
पाय। सृष्टि संहारकारिने॥ ३॥ नमोस्तु नक्षत्रजाय। सर्व वस्तु प्रदायिने

। नानानन्द प्रमादाय। परमात्म स्वरूपिने॥ ४॥ नैवेद्य पुष्पानि सुधूप दीप
विचित्र गन्धादि समस्त पूजा। गृहान देवस नमो यनीयं। विचित्र संसार विम
वनाय॥ ५॥ ॐ जासौ श्री नाम्बूमत्स्य सूर्यातिजलनिधौ नागपर्यङ्क हेमो
ष स्थारुह्य लक्षि: त्रिमणिकिरणलीढो यश्च श्वास वाते: व्रजन्त्यो: ह्
यमा नामूति गणसकलीसंध्यद्र सामम क्रविष्णु लोकनाथ: कलिकलुष
हा: पातुमाँ पद्मनाभ:॥ ॐ यासा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रा
यताक्षी। गम्भीरावर्तनाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया। लक्ष्मी

छिद्रे ग्नजजरुम्मनि गणवविश्र ८ सानिणाहम कूमे न्निर्यं सापम्मरु स्नानमस्तु
स्महस सर्व्वमाकृत्युक्ता॥ लक्ष्मीया॥ ॥ ॐ उह्मि द्वमलमूत्रादि स्नानकुकु
र्मसर्वस्य मत्र। अकुलेदसिंवाविकस्यनी शाजनार्द्दन॥ कदाचित्सुवपुस
तुष्क स्वप्नवायद्विमैथून ८। गंगा ह्नि द्वरथानन्तकमानी शाजनार्द्दनं॥ ॥
ॐ पापाहं पापकर्म्मानि पापात्मा पापसंभव। त्राहि मां पुंडवरीक्ष सर्व्वपापह
रो भव। अन्यथा शरण नास्ति त्वमेव शरणं मम। तस्मात्कारुण्यभावेन रक्ष
रक्ष जनार्द्दन ८॥ यजमानस्य अनन्तव्रतनिमित्यर्थ अद्यगन्धपुष्प धूपदी
प ज्वर्व्वनविद्यसर्व्व यथा विपूर्णमस्तु॥ मङ्गलविसर्ज्जनं॥ पुष्पहूयनं॥ ॥
मनाद्वस्त्रदक्षिणा॥ ब्रिग्रुव॥ ब्राह्मणपूजनं॥ चन्दनादि यज्ञोपवीत पुष्प
वस्त्र कल्प दक्षिणा॥ अर्घ्यपात्रादन्न तुम्नी अक्षि चन्दनादि पूर्षा आ
शीर्वाद॥ मालकास्त्र आच्छुसविय॥ त्रुनीनहूकसाक्षीथवक॥ वाक्तानछयन
नन्न वस्त्र आमपन॥ ॥ अधिनिल्लीय मियावाय मिसायापूनष॥ वपूपर
मदनसा द्वसीनव ब्राह्मणनीनव॥ रथं निघ्नीनप्रासनेयाय॥ उह्मि
द्रनदीसमर्प्ययत्॥ ० ॥ श्रीअनन्तव्रतविधि॥ ० ॥ संनीधर्म्मसचायदे
न। वाक्य॥ अनन्तव्रतप्रत्यानुष्ठानतिमित्य ध ॥ अद्यवैक्रमवविय ॥

पूर्ववत्‌ यथाविधानेन कलशपूर्यर्चनं ॥ मण्डलादिविसर्जनं ॥ वायव्यादिपूर्व
दुर्वादिकर्तिनां ॥ ॥ कलशविसर्जनं ॥ यजमानस्य भोजानन्तरं कलं ॥ वस्त्र
किण यादि दक्षिणादक्षिणापूर्वक विसर्जनाय कुर्यात्‌ ॥ ॐ संवत्सरं नताभूजी
सं पाद्यविधिवत्सम । व्रज कर्मानामकल्पं विपुलार्कयत्र कुर्या ॥ व्रजस्थायादिध्वा
य प्रयादि परमध्वन । नमानमस्क वाति ध्वगोत्तान नामकाप्रता ॥ ॥ कलशादि
विसर्जनं ॥ न्यासलिकाय ॥ सूर्यमाहि ॥ ॥ दर्पन नामप्रताउनि धाय ॥ अभिष
कं ॥ ॐ द्रवस्यत्वा ॥ चन्दन ॥ ॐ उद्दहक ॥ सिन्दूर ॥ ॐ त्वं ऊविद ॥

माहानी ॥ ॐ समिध्वंजन ॥ सगुण ॥ ॐ द्यविज्राप्राति ॥ सिंध्रमूल अर्घादिलादि
प्रमूनिक्षाय ॥ आशीर्वाद ॥ ब्राह्मणसादि स्वस्वस्थाने नानयत्‌ ॥ कौमाचासोत
समयादि पूजाक्षेय ॥ लिहावरद्याव अर्घादिलादि कौमाचा समयं वा साहू ॥
ॐ तिप्रनक्वकविधिसमाप्तं ॥ ॐ ॥ यादृष्टं पुस्तकं दृष्ट्वा तादृष्टं लिखि
तं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा साधनीयं महद्बुधे ॥ सं ११३३ फाल्गुण
कृष्ण यात्रा शुक्रवार दिन लिखित संपूर्णं श्री वैकुठ समर्पे ॥ शुभ ॥
कल्क ॥ ॥ सं पद्मा न पस्थन पूनामासं स्त्र नसाव । जन्म प्रायपन वी
गई मालमनि हाजनं ॥ अथिन कौ तय याथ ॥

ॐ नमो महालक्ष्मी ॥ महालक्ष्मी व्रत विधान लिख्यते ॥ ॥ न्यासि व क्ष ॥ स्न
नद्य ॥ स्नानं कुर्यात ॥ धूनिं कुर्यात् ॥ यज्ञस्नान अदातुं लिख्यते ॥ ॐ अ
द्य पूर्णमनगति ॥ यजमानस्य महालक्ष्मी व्रत निमित्यर्थं कर्तुं ह्युर्याय अ
र्घं नम ॥ स्नानं न ॥ ॐ माहात्म्यकारेति ॥ ॥ पुष्प हस्तेन यावकं ॥ ॐ
सिद्धि लक्ष्मी यानम्यादि ॥ पुष्प हस्तेन समर्पयामि ॥ ब्राह्मणस्नानकं
विय ॥ ब्राह्मणेन गुरु नमस्कारं ॥ ॐ अखण्डमण्डलाकारेति ॥ न्यासया
स ॥ ॐ महालक्ष्मी हृदयाय नमः ४ ॥ इत्यादि कलाङ्ग न्यास ॥ अर्घपात्र पूजा

हृदयादिन ॥ चन्दनाक्षत पुष्प धूप दीपं नम ॥ आत्मन सिञ्चनं ॥ आत्मन
चन्दनं २ ॥ आत्मन पुष्प २ ॥ आत्मासनाय नमः ३ ॥ ॥ गणापति पूजन ॥ ॐ ग
णा यामि ॥ ॐ देवस्य त्वा ॥ ॐ त्वमग्ने द्युभि ॥ ॐ आपो अस्मान् ॥ ॐ यस्य
कुर्मः ॥ ॐ यद्क्रन्द ॥ ॐ प्रजानन ॥ ॐ स्योना पृथिवी नो ॥ ॐ यत्प
को ॥ ॐ अग्निर्दैवन ॥ ॐ द्यावा देवी ॥ ॐ वैश्वानर ॥ ॐ पृथु ॥
ॐ इदं विष्णु ॥ ॐ अग्निमीडे ॥ ॐ इषे त्वा ॥ ॐ अग्न आयाहि ॥ ॐ शन्नो देवी

ॐ उपद्ध्वं ॥ ॐ नदीसू ४ ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ वृहस्पत ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ
श्रीश्चत ॥ ॐ अस्माकमिन्द्र ॥ ॐ नमोवरु णाय ॥ ॐ सफयूकुंनि ॥ ॐ असी
ऊ स्माभ ॥ ॐ निशुमलतघालाईवन ॥ ॥ पुन ४ मूलदेवास्मक ॥ ॐ ॐ द
ठहवि ॥ ॐ विश्वकर्मत्वद्र ॥ ॐ युम दन्तर्न ॥ ॐ चोद्रक्तमषजानां ॥ ॐ त्रा क्षा
विभमनय ४ श ० सूक्तासस्तु घा ॐ यार्लि पुरुनामत्रुद्रि ४ । आमासनपतिर्ह यु
त्युकमारु वावद नस्माना अद्रु ४ ॥ ॐ अग्नेन गृहपतय सगृहपतिस्त्वम ः
यो ऽग्ने गृहपतिनाहयास ० सुगृहपतिस्त्वमया ऽग्ने गृहपतिनाहया ४ ।

अरु स्कु विलोमर्द यत्वानिसाहुसन ० हिमा ४ सूर्यस्याह्नतम न्वावर्के ॥ ॐ स
व्यक्षम ग्रद्धा स्वभ ऊगद्वभ धनेक्षमादि श्वक्षमम रु ष्वभ ज्ञातावभमा
स्वभ ऊ ाऊनक्षम ऊनिध्यमात्वक्षम स्तुक्रक्षम स्तुत्तनक्षम यज्ञेनकल्प
न्ता ॥ ॐ धान्यमसि ॥ ॐ वय ० साम ॥ ॐ अयन्ना अग्नि ॥ ॐ असित्वमी
अस्याहित्या पूर्वन्नसित्रिना शुद्धनवुभन ।असिसाम नुगमयाविपृकु
आदृक्मकिलिडिविव चनानि ॥ ॐ हिवधवर्ण्णा ॥ ॐ ६ं ६ं नतिविह
वम ० धामिद्र पूतिवद्र स्वपूति ४ स्वाहा । उयन्न ऊवनूठीमारु व न

नुः ॐमागर्वं ष यत् वाय स्थावम स्मा सृदा धन स्वाहा ॥ ॐ नत्वायामि ॥ ॐ
अम्भ ऊर्ध्वि क ॥ ॐ श्री ध्यक लक्ष्मी ॥ ॐ निशातल लक्ष्मी सवद ॥ ॥ कल
गयन ॥ ॐ आदित्य ॥ ॥ गणपति ॥ ॐ गण नीत्वा ॥ ॥ कौमारी ॥ ॐ
भैरव ॥ ॐ नमो वक्र्नाय ॥ ॥ मातृस ॥ ॐ आयंनो ॥ ॥ कुम्ह ॥ ॐ अ
म्बत्र्यम्बिक ॥ ॥ कौमारी ॥ ॐ जातवेदसे ॥ ॥ सव ॥ ॐ नमः स्तुत
र्य श्री ॥ ॥ ॐ रवापिरवा ॥ ॐ विश्वत स्चक्षु ॥ ॥ सध ॥ ॐ आकृष्ण ॥ ॐ
गागनमि ञ ॥ ॐ वाक्षनस ॥ ॐ सद्याजाता ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ अग्नमा

ःदर्पन ॥ ॐ नन्द्र विम्वनिर्ध यस्य दर्पणस रूद्दर्पन । ॐ त्मविम्बं समनस्य सं
पुदाय ऊ यायव ॥ सिन्धुर मूदस ॥ ॐ सिन्दूर शोधसपोति प्रदंयूनदिवसन्ते ।
सौभाग्य जयदं लक्ष्मी निवासं सर्वकामदं ॥ भारनीस ॥ ॐ कर्कुतीवत्र्सो साय
ने लार्ककर्षणपर्व । भाद्रनं सर्वसत्वानां संरा याकर्ष ःदिन ॥

सा ॥ ॐ जुलन्न पक्षि ॥ ॐ ञ्चन्यपक्षि ॥ ॐ नकसचाः स्वार्घे ॥
ॐ थाःनुधाःल ॥ ॐ जस्वमुपेथाःमा ॥ ॐ सम्बङ्खवामि ॥ ॐ जुरवा
जाय ॥ ॐ समि[illegible] ॥ मकुन ॥ ॐ श्रीस्वभलक्ष्मी ॥ सिंधमूरु ॥ ॥ ॐ नम
४णनवृव ॥ ॐ प क्षीने ॥ ॐ श्रीस्वज ॥ ॐ धूवसा ॥ धूप ॥ ॥ ॐ भजासि ॥ दी
प ॥ ॥ ॐ या४स्फुलनी ॥ फल ॥ ॥ ॐ जुम्नपानन ॥ ॐ लसित्रनस्तु ॥ ॐ च
यु४पृथिवी ॥ ॐ विष्णुवनादमस्ति ॥ ॐ शुद्धिदेवता ॥ ॐ श्री४गाने चु४ ॥
ॐ ब्रस्वकर्यजामहे ॥ ॐ समनाहूति ॥ प्रतिष्ठा ॥ ॥ ॐ तिषवाहन

दुःखानि वै विनिवाय ॥ ॐ पापं पापन संहर्त्ता सर्व्वपापहराय च ॥ लक्ष्मी वृद्धिक
र्त्ते शान्ते निर्म्मुक्त नक्षत्रमार्ग ॥ ॐ दीप महाद्युति पुष्पसर्षप संयुक्त ।
सर्व्वव्याधिविनिर्म्मुक्तं पापं सर्व्वं हराय च ४ ॥ वलिर्दिपं ७ ॥ ॥ अर्घपा
त्र लक्षण नाय वृत्ति ॥ ॐ उत्तम नाग लक्षण जात सूर्य्यांपर्व्वतवासनी । मृत्था
निसमूत्पन्ने मत्युंयमस्मर्तं जले ॥ ॥ न्यासयाय ॥ हृदयादिन ॥ अर्घपात्र
पूजा । व्रग नन्दान नन्दि न र्ध अर्घपात्रस ॥ ॐ गंगा च यमुना चैव ॥ ॥ एकपु
ष्पोआसानं ॥ एकपुष्प मायानं ॥ एकपुष्प तिलरूपर्णं ॥ वंतनगय स्नान

न कुर्य ॥ ॥ धगे स्नान आकनले खंजान ॥ आवाहनमन्त्र ॥ ॐ देवादि
र्थ्य विनासाय सर्व्वसिद्धि ४ प्रदायिने । आगच्छ वरद कल्याणि हन वर्ष
मिदम गुल ॥ ॥ केवाल खवाजान ॥ ॐ आयान्तु पचम लानि गृहत्त
स्मिन्न वायय । यथा जगनि मार्थ्य । यत्र कालापूजा न वद्र ॥ मिनि स्नाप
न ॥ ॥ गणद्वार पूजा स्नान नत्म ॥ ॐ गजमुखाय नमः ॥ ॐ हयमुखा
य २ ॥ ॐ सिंहमुखाय २ ॥ ॐ वराहमुखाय २ ॥ ॐ नन्दिने २ ॥ ॐ महा
कालाय २ ॥ ॐ भृङ्गिने २ ॥ ॐ विनायकाय २ ॥ ॐ वृषाय २ ॥ ॐ स्कन्दा

य २॥ ॐ दक्षाय २॥ ॐ धर्माय २॥ ॐ ज्ञानाय २॥ ॐ वैराज्ञानाय २॥ ॐ ऐ
श्वर्याय २॥ ॐ अधर्माय २॥ ॐ अज्ञानाय २॥ ॐ अवैराज्ञानाय २॥ ॐ अ
नैश्वर्याय २॥ ॐ हृदयाय २॥ ॐ शिरसे २॥ ॐ शिखाय २॥ ॐ कवचा
य २॥ ॐ नेत्राय २॥ ॐ अस्त्राय २॥ ॐ महालक्ष्म्यै देव्यै २॥ ॥ इति आस
न पूजा॥ ॥ ॐ आधारशक्तये २॥ ॐ अनन्तासनाय २॥ ॐ स्कन्धाय २॥
ॐ अंकुनाय २॥ ॐ नालाय २॥ ॐ पद्माय २॥ ॐ पत्राय २॥ ॐ केशनाय २॥
ॐ कर्णिकाय २॥ ॐ रौप्यै २॥ ॐ सिंहासनाय २॥ ॥ अथ ध्यान॥ पद्म

प्रणत स्थान ... म॥ ॐ सिंहपद्मासमनूढा॥ कूर्मभार्गु समप्रभा॥ त्रमांसी
सुभूस्वादवी॥ नीचात्यलदखड्ग॥ चातनु जासमाकी ... सर्वालंकान
कृषिता। रवकृषीं ०सनं शूलं त्रिशूलं पद्मभं कूर्मं॥ दक्षिणे न केना
नेन॥ दुर्वन्द्व वरदायनी॥ मथाप नहसान॥ ह्रदकं चिन्दिम ६ धनु॥ क
मन्दतुकपालश्च॥ पुस्तकापासमकुर्य॥ जाद लपमानं जापि॥ वेनि वाला
दकाचिनी। त्रवैदूर्यंदुसं विलीं॥ महालक्ष्मी नमाःस्तुते॥ महालक्ष्मी॥

मूर्त्तये ध्यानपूर्व्वं २॥ ॥थ्वंथे थवते ध्यान॥ आत्मन ध्यानपूर्व्वं २॥ ॥
चुनजवस श्रीमानीपूजा॥ ॐ मयूरासनाय २॥ ॐ गंकिरस्त्रीय २॥ ॐ
श्रीमानीमूर्त्तये २॥ ध्यान॥ स्फाद्रुस्नानवनअरुण॥ ॐ सिन्दूरवर्णं चका
शां, दाडिमीकुसुमप्रभा। त्रिशूल[illegible]डमरुहस्ता देवी, [illegible] आसना पद्मा॥
मूलपाशकलश[illegible], नानालङ्कारविभूषिता, नीलकण्ठसमायुक्ता, पीनस्तनी
सुवदना॥ श्रीमानीमूर्त्तये ध्यानपूर्व्वं २॥ ॥स्वबस कालीपूजा॥ ॐ श्वेत
[illegible]सनाय २॥ ॐ स्व[illegible]य २॥ ॐ कालीमूर्त्तये २॥ ॥ध्यान॥

[illegible]स्नान, [illegible]॥ ॐ निर्म्मांसं वा[illegible]वदना, [illegible]
कपालमालिनी देवी, मुण्डखड्गधारिणी, नागयज्ञोपवीतांगी, [illegible]
[illegible]गामिनी॥ [illegible] देवी, [illegible] कपाल[illegible]
[illegible], [illegible] धारिणी, [illegible] ध्यान [illegible]
मूलपाशक[illegible], [illegible] कालीकरालवदना, महाका
लानमाम्यहं॥ ॐ [illegible] कमलकमल[illegible]
कमलमध्ये महालक्ष्मी, [illegible] स्वाहा॥ ॥[illegible]॥

कालामूर्त्तय ध्यानपूर्ष २॥ ॥ गणपूजनं ॥ ॐ नववाबटुकाय २॥ ॐ सा
लिवाहन नाकाय २॥ ॐ निम्ववनी देव्यै २॥ ॐ गुह्यकनी २॥ ॐ ध्यानामूर्त्तवीर
ॐ सर्व्वलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ विश्वलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ भुवनलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ नाग्य
लक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ मङ्गललक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ गृहलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ धनलक्ष्मी दे
व्यै २॥ ॐ धान्यलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ सन्तानलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ जयलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ स्व
लक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ बुद्धिलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ धृतलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ ज्ञानलक्ष्मी दे
व्यै २॥ ॐ भाग्यलक्ष्मी देव्यै २॥ ॐ श्रीमहालक्ष्मी देव्यै २॥ ॥ [illegible]यसक्षमालिङ्ग ॥

ॐ ब्रह्मायणी २॥ ॐ माहेश्वरी २॥ ॐ कौमारी २॥ ॐ वैष्णवी २॥ ॐ वाराही २
ॐ इन्द्रायणी २॥ ॐ चामुण्डाय २॥ ॐ महालक्ष्मी २॥ ॐ कौमारीमूर्त्तय २॥
वटुकसकालिङ्ग ॥ ॐ वृउबटुकाय २॥ ॐ प्रबटुकाय २॥ ॐ बटुकग्राय २॥ ॐ बटु
नाथकाय २॥ ॐ बटुकाय २॥ ॐ बटुवनी २॥ ॐ बटुरूपाय २॥ ॐ जातिबटु
कुकाय २॥ ॐ कालामूर्त्तय २॥ ॥ पुनः मध्यपूजनं ॥ ॐ जयायै २॥
ॐ विजयायै २॥ ॐ अपराजितायै २॥ ॐ अपनाजिमायै २॥ ॐ जम्भन्यै २॥ ॐ
स्तम्भन्यै २॥ ॐ मोहिन्यै २॥ ॐ आकर्षन्यै २॥ ॐ इन्द्राय २॥ ॐ जृम्भनाय २॥

ॐ उमाय २॥ ॐ नैऋत्याय २॥ ॐ वरुणाय २॥ ॐ वायव २॥ ॐ कुवेराय २॥
ॐ ईशानाय २॥ ॐ ऊर्द्ध इन्द्राय २॥ ॐ अधइन्द्राय २॥ ॐ स्वर्ग्गाय २॥ ॐ मर्त्याय
२॥ ॐ पातालाय २॥ ॥ आवाहनादि॥ ॥ गंगास्नान॥ लीरव जानवाक्य॥ ॐ
पावनं सर्वतीर्थानां मंगल्यदि स्य कुसागरं। स्नानं प्रकल्पितं मयेनं गलिनं ४ स्ना
पय मह॥ ॥ त्रियाञ्जलि॥ स्नानके जाकने॥ ॐ यउ यप नमल क्षि पद्म
स्थनी. कमलकमलस्थनी। कमलम धाम दालक्ष्मी. नार्थ्य भद्दकि वनस्नाका॥
यू॥ दसियाता॥ ॐ दिव्याम्बर वस्त्रादि वस्त्रानां तुर्य विविश वस्त्रादि संप्र गृह्यतां। य

त्यास वामवचवसुलानं रधद्दवंस्तु विनभानस्कृ॥ ॥ चन्दनवाक्य॥ ॐ
चन्दनागुरु कर्पूरं. मनशाल समन्वितं। मृगनाभि ४ तथा यक्षं. चन्दनप्र
तिगृह्यतां॥ ॥ गन्धचन्दन॥ ॐ गन्धं गोतारुं दनाथं. सर्वदेवानि पूजि
ता। सर्वकाम प्रदान्येव. गृह्यान गन्धचन्दनं॥ ॥ सिन्दूर॥ ॐ वीरत
स्मसमन्वितं. विघ्नैर्द्रावकायिनी। रिद्धिसिद्धि प्रदातानं सिन्दूरं प्रतिगृ
ह्यतां॥ ॥ त्रियाञ्जम॥ ॐ यज्ञोपवीतं पवित्रं वसि वस्त्रं महादासवरूपकं। प्रति
गृह्ण उत्तं वः। यज्ञोपवीतं प्रतिगृह्यतां॥ ॥ अक्षत की मालिस्क. ...

म ॥ ॐ यक्षाय वानं ॥ ॥ स्ववस कालीस ॥ हाकुजुगम ॥ ॐ यक्षाय वानं ॥
स्वान ॥ ॐ जाति चम्पक पुंनाग वाचा । जीती कुन्दकुलुष्ठका ॥ सुवरुद मनस्त्वे
व । सवकावद मालिका । बन्धूकं मल्लिका । रेव । जयन्ति वृत्तुवास्तथा । नीलान्य
व कान्हालं ॥ पुष्पं भ्यतानि धातगं ॥ ॥ मालस्वान ॥ ॐ माल्यानि सुगन्धानि
मालत्यादि विविधानिव । मयाहृतानि पूजार्थं मालापुष्पं प्र [illegible]
[illegible] व स कोमाविस ॥ काहूस्वान ॥ ॐ काथाचितनयथपुष्पं । पञ्चव
ठुसुगंधिरि । विचित्रं पिठिमालं । गृहान परमेश्वरी ॥ ॥ स्ववस

कालिस ॥ हाकुस्वान ॥ ॐ काथाचितनयथापुष्पं ॥ ॥ जाजिस्वान ॥ ॐ
मल्लीबाजवर्णंथानि । पुष्पजालि सुगंधिनि । नानागंधसुगन्धाया जाजी
पुष्पं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ पद्मपुष्प ॥ ॐ पद्मपद्मालयादेवी वासुदेवस्य
वल्लभा । लक्ष्मीसंतति लोकाङ्क्ष । पद्मपुष्पं नमास्तुते ॥ ॥ उत्पल ॥ ॐ उ
त्पलं गिरिजा प्रत्ता । गंकवस्यहितैः प्रिय । पुरयोरधनःश्रेव ॥ उत्पलं च
नमास्तुते ॥ ॥ कमल ॥ ॐ कलाहूवसुगन्धाच ॥ देवानीप्रियमुत्तमं ।
गृहाण देवी महालक्ष्मी । कमलीयपिपुष्पकैः ॥ ॥ उलगा ॥ ॐ देवं

नाद्वर्द्धनपुष्पं स्वर्गजातायनानं । तुलसीपुष्पदं पुष्पं गृहानपरमेश्व
री ॥ ॥ धेवन ॥ ॐ दमनं मदनाकूतं सुगन्धेदुनरूषिणीं । ज्ञानिज्ञनसमे
श्रुकिं दमनस्थ गृहानमा ॥ ॥ दीपोमन्त ॥ ॐ दूर्वापुष्पानि वेमाति सुप्र
सन्तानवृद्धिदा । श्रीलक्ष्मी विश्वरूपात्मा गृहानपरमेश्वरी ॥ ॥ धीयाअक्ष
ॐ अक्षतनस्तुनेवद्धी सर्व्वपापवदप्रदं । तुष्टि नवनवगी ॥ अक्षतायनमस्तुते ॥
शीयाधारफल ॥ ॐ इदंफलपुष्पगन्धानि लक्ष्मीगतजयप्रदा । सिद्धिदा सिद्धिदा
नित्यं गृहानपरमेश्वरी ॥ ० ॥ नगकलशपूजन ॥ ॐ ब्रह्मणे २ ॥ ॐ विष्णु

वे २ ॥ ॐ सदाशिवाय २ ॥ ॐ गंगायै २ ॥ ॐ यमुनायै २ ॥ ॐ गोदावल्यै २ ॥
ॐ सरस्वत्यै २ ॥ ॐ नर्मदायै २ ॥ ॐ सिन्धवे २ ॥ ॐ कावेर्यै २ ॥ ॐ मार्कण्डे
य २ ॥ ॐ गौतमाय २ ॥ ॐ रुद्रजाय २ ॥ ॐ नारदाय २ ॥ ॐ कश्यपाय २ ॥
ॐ यमदग्नी २ ॥ ॐ विश्वामित्राय २ ॥ ॐ वसिष्ठाय २ ॥ ॐ व्यासाय २ ॥ ॐ ध्रुव
२ ॥ ॐ मरीचीभ्यां २ ॥ ॐ सप्तऋषिभ्यां २ ॥ ॐ सर्वपूर्णकलशयमपूजेय
न अमृतोस्यचतुर्द्वानकायमूर्तिभ्यां २ ॥ ॥ आवाहनअवकुण्ठके न
नायवमनाया थं स्वाहा चन्द्रनाक्षेनपुष्पं २ ॥ उकमका ॥ ॐ यज्ञायज्ञा

नं दवन्दवसि ॥ ॥ मालस्वान ॥ ॐ काश्यविनयथपूर्ष्यं ॥ ॥ ॐति कलश
पूजा ॥ ॥ नगासनपूजनं ॥ ॐ अनन्ताय २ ॥ ॐ वासुकी २ ॥ ॐ तक्षकाय २ ॥
ॐ कर्कोटकाय २ ॥ ॐ पद्माय २ ॥ ॐ महापद्माय २ ॥ ॐ शंखपालाय २ ॥ ॐ कुली
काय २ ॥ ॐ पूर्वसमुद्रस्याः २ ॥ ॐ दक्षिणसमुद्रस्याः २ ॥ ॐ पश्चिमसमुद्रस्याः २ ॥
ॐ उत्तरसमुद्रस्याः २ ॥ ॐ मानससरोवरस्याः २ ॥ ॐ सप्तसागरस्याः २ ॥ ॐ अन
न्तादिनवनागराजस्याः २ ॥ ॥ आवाहनअवकुण्ठनकनीर्यवमनीयाद्य
स्वाहावन्दनाक्षतपूर्ष्यं २ ॥ ऊउमक्का वाद्य ॥ ॐ यज्ञोपवीतं ॥ ॥ मालस्वान वाद्य ॥

ॐ काश्यविनयथापूर्ष्यं ॥ ॐतिसनपूजा ॥ ॥ नगागणपतिपूजनं ॥ ॐ
गणपतये २ ॥ ॐ हेरम्बाय २ ॥ ॐ लम्बोदराय २ ॥ ॐ गजाननाय २ ॥ ॐ विघ्नना
शाय २ ॥ ॐ विघ्नध्वंसनाय २ ॥ ॐ लम्बकर्णाय २ ॥ ॐ मूषासनाय २ ॥ ॐ गणप
तिविघ्नराजमूर्तयस्यापूर्ष्यं २ ॥ आवाहनादि ॥ ऊउमक्क ॥ ॐ यज्ञोपवीतंदवस ॥
मालस्वानं ॥ ॐ काश्यविनयथपूर्ष्यं ॥ ॐतिगणपतिपूजा ॥ ॥ नगागुरुपू
जनं ॥ ॐ गुरुस्याः २ ॥ ॐ ब्रह्मणे २ ॥ ॐ बृहस्पतिमूर्तयस्यापूर्ष्यं २ ॥ आवाहना
दि ॥ ऊउमक्का ॥ ॐ यज्ञोपवीतंदवसि ॥ मालस्वाना ॥ ॐ काश्यविनयथपू

र्घ्यं ॥ ॐ निगुरुपूजा ॥ ॥ नमो बलिपूजनं ॥ ॐ स्वस्थानश्वरपालाय २ ॥ ॐ नु
नसिंहमहाभैरवाय २ ॥ ॐ नपाल वत्सलादेवी २ ॥ ॐ प्रियागमादेश्वरी देवी
२ ॥ ॐ लंकाया नाहगादेवी २ ॥ ॐ स्वस्थानश्वरपालमूर्त्तये २ ॥ आवाहनादि ॥ ॥
हाकु उजमका ॥ ॐ उस्मापवाशं देवदेवसी ॥ हाकु स्नान ॥ ॐ कानाविनयथ
पूर्घ्यं ॥ ॐ नि बलिपूजा ॥ ॥ नमः कौमारीपूजनं ॥ ॐ ब्रह्मायण्यै २ ॥ ॐ माहे
श्वरी २ ॥ ॐ कौमार्य्यै २ ॥ ॐ वैष्णव्यै २ ॥ ॐ वाराह्यै २ ॥ ॐ इन्द्रायण्यै २ ॥ ॐ चामु
ण्डे २ ॥ ॐ महालक्ष्मी २ ॥ ॐ कौमारीमूर्त्तये २ ॥ आवाहनादि ॥ हाकु उजमका ॥

ॐ यज्ञोपवीतं ॥ हाकु स्नान ॥ ॐ कानाविनयथापूर्घ्यं ॥ ॐ नि कौमारी
पूजा ॥ ॥ नमः भैरवपूजनं ॥ ॐ असिताङ्ग भैरवाय २ ॥ ॐ रुरु भैरवाय २ ॥
ॐ चण्ड भैरवाय २ ॥ ॐ क्रोध भैरवाय २ ॥ ॐ उन्मत्त भैरवाय २ ॥ ॐ क
पालि भैरवाय २ ॥ ॐ भीषण भैरवाय २ ॥ ॐ संहार भैरवाय २ ॥ ॐ बाबु
ली भैरवाय २ ॥ ॐ असिताङ्गादि अष्टभैरवाय २ ॥ ॥ आवाहनादि ॥
हाकु उजम ॥ ॐ यज्ञोपवीतं ॥ हाकु स्नान ॥ ॐ कानाविनयथापूर्घ्यं ॥
ॐ नि भैरवपूजा ॥ ॥ नमः गोग्रासपूजनं ॥ ॐ नन्दाय २ ॥ ॐ सुभद्राय

२ ॥ ॐ गुणज्ञाय २ ॥ ॐ गुलिलाय २ ॥ ॐ गुणज्ञे २ ॥ ॐ गुमनलेश २ ॥ ॐ कपिला
द्विपञ्च [illegible] मा[illegible]कश्चा २ ॥ आवाहनादि ॥ उजमकं ॥ ॐ यज्ञोपवीतं ॥ स्नानं ॥
ॐ कालोविनय धूपं ॥ [illegible]सपूजा ॥ ॥ नगाइस्वापिस्वापूजनं ॥
ॐ वक्रिहावींगाय २ ॥ ॐ [illegible]नन्दवागच्छा २ ॥ ॐ कुलदेवतस्या २ ॥ आवाहना ॥
उजमकं ॥ ॐ यज्ञोपवीतं ॥ स्नानं ॥ ॐ कालोविनय धूपं ॥ [illegible]
पिस्वापूजा ॥ ॥ नगाहृदयादिनपूजनं ॥ अर्घगन्धादि ॥ ॥ फलवाक्य ॥
ॐ दाडिमं पनसं द्रक्षा मूदकि वामयोटकी । नालकेलानि खर्जूरं च । तिनिर्

ताक्रुलानि च ॥ विल्वादि विनजाम्बीरं नाविकेरकदलानि च । बीजपूरकनारिंग
धातकी फलसंयुक्तं ॥ ॥ पक्वान ॥ ॐ गर्भकायामसंयुक्तं पक्वान्नं समर्पितं
पर्मं । प्रकारं घातेदं येव रूहानपवमस्वेवा ॥ ॥ नैवेद्य ॥ ॐ नैवेद्यं गृ
ह्यतां देवा तक्तिमुकुन्दवलींकुरु । ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिं ॥
॥ ताम्बूल ॥ ॐ सर्वसौताम्बूसंयक्ति नाग्रपत्रप्रियं दृढम् । आगमोक्तविनिर्मु
क्तं मे मूलं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ धूपावनिच्छाय ॥ ॐ धूपायन्दवनं वगौ नाना
गन्धसमन्वितं । आघ्राणं सर्वदेवानां धूपायं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ दीपाय

त्रैका। कायद्वीप ॥ जय जय पद्मल श्री पद्मम ग्वरी। कमल कमलम्बरी। कमल महा मह
ानवाय ॥ ॐ त्वमेव पृथिवी अग्निः। वायु नाकास भव च थ त्वमेव अग्नि सूर्ये द्वी
पायप्रतिगृह्णन्तु ॥ ॥ थनमाद नाहिथाय ॥ ॥ नगाद्द बस्क स्वानतन्नुं ॥ ॐ ऋ
ग्वेदाय २ ॥ ॐ यजुर्वेदाय २ ॥ ॐ सामवेदाय २ ॥ ॐ अथर्ववेदाय २ ॥ ॐ कृतयुग
य २ ॥ ॐ त्रेतायुगाय २ ॥ ॐ द्वापरयुगाय २ ॥ ॐ कलियुगाय २ ॥ ॐ कृत्तिकाय २ ॥
ॐ रोहिनी २ ॥ ॐ मृगशिलाय २ ॥ ॐ आर्द्रा २ ॥ ॐ पुनर्वसु २ ॥ ॐ पुष्याय २ ॥ ॐ अश्
लेखाय २ ॥ ॐ मघाय २ ॥ ॐ पूर्वफाल्गुनी २ ॥ ॐ उत्तरफाल्गुनी २ ॥ ॐ हस्ताय २ ॥ ॐ चि
त्राय २ ॥ ॐ स्वाती २ ॥ ॐ विशाखाय २ ॥ ॐ अनुराधाय २ ॥ ॐ ज्येष्ठाय २ ॥ ॐ मूला
लक्षी। नक्षं मदहिवनद स्वाहा ॥ १६ ॥

या २ ॥ ॐ पूर्वाषाढाय २ ॥ ॐ उत्तराषाढाय २ ॥ ॐ अविविजे २ ॥ ॐ श्रवनाय २ ॥ ॐ धन
ष्टाय २ ॥ ॐ शतभिषाय २ ॥ ॐ पूर्वभद्राय २ ॥ ॐ उत्तरभद्राय २ ॥ ॐ रेवतीनी २ ॥ ॐ
अश्विनी २ ॥ ॐ भरनी २ ॥ ॐ कृत्तिकादि नक्षत्र स्वाहा ॥ ॥ ॐ विस्कम्भाय २ ॥
ॐ प्रीतय २ ॥ ॐ आयुष्मानाय २ ॥ ॐ सौभाग्याय २ ॥ ॐ शोभनाय २ ॥ ॐ अति
गण्डाय २ ॥ ॐ सुकर्माय २ ॥ ॐ धृतय २ ॥ ॐ शूलाय २ ॥ ॐ गण्डाय २ ॥ ॐ वृद्धि
य २ ॥ ॐ ध्रुवाय २ ॥ ॐ व्याघातय २ ॥ ॐ हर्षणाय २ ॥ ॐ वज्राय २ ॥ ॐ सिद्धिवर ॥
ॐ व्यतिपाताय २ ॥ ॐ वरियानाय २ ॥ ॐ परिघाय २ ॥ ॐ शिवाय २ ॥ ॐ सिद्धय २ ॥

ॐ साध्याय २॥ ॐ सुसाय २॥ ॐ शुक्राय २॥ ॐ बृहस्पते २॥ ॐ इन्द्राय २॥ ॐ वैष्ण
लि २॥ ॐ विस्वकर्म्मादि यात्तेस्थाय २॥ ॥ ॐ प्रतिपद्याय २॥ ॐ द्वितियाय २॥ ॐ तृती
याय २॥ ॐ चतुर्थी २॥ ॐ पञ्चमी २॥ ॐ षष्ठमी २॥ ॐ सप्तमी २॥ ॐ अष्टमी २॥ ॐ
नवमी २॥ ॐ दशमी २॥ ॐ एकादशी २॥ ॐ द्वादशी २॥ ॐ त्रयादशी २॥ ॐ चतुर्द
शी २॥ ॐ पूर्ण्णमावासा २॥ ॐ अमावाशी २॥ ॐ प्रतिपद्यादितिथिस्थाय २॥ ॥ ॐ
आदित्याय २॥ ॐ सोमाय २॥ ॐ अंगारकाय २॥ ॐ बुधाय २॥ ॐ बृहस्पतये २॥
ॐ शुक्राय २॥ ॐ शनिश्चराय २॥ ॐ राहवे २॥ ॐ केतवे २॥ ॐ उन्मन २॥ ॐ

तिथ्यादि नवग्रहस्थाय २॥ ॥ ॐ मेषाय २॥ ॐ वृषाय २॥ ॐ मिथुनाय २॥
ॐ कर्क्कटाय २॥ ॐ सिंहाय २॥ ॐ कन्याय २॥ ॐ तुलाय २॥ ॐ विश्चकाय २॥ ॐ
धनुषय २॥ ॐ मकलाय २॥ ॐ कुम्भाय २॥ ॐ मीनाय २ ॥ ॐ श्रीमहालक्ष्मीमूर्त्ते
य २॥ ॥ आवाहनाङ्कुपनञ्चवर्ण्ण्ड कन्दलीयंचमनियार्घ स्वाहा चन्द
नारनयुर्ष्पनेम ॥ ॥ ऊँ उमकोश्वस्त ॥ ॐ यज्ञपवीतं ॥ मालस्वान ॥ ॐ का
मादि नयथापूर्ष्प ॥ ॥ अत्र गन्धादि ॥ ॥ नमो अर्घ्य ॥ गरखस अर्घ्यस
फ उड्ड वन्दनाङ्कन पुर्ष्पनिधायगरव ॥ अर्घ्यसजान ॥ ॐ अद्यवानहके

ले ॥ ॐ अ् याद्नि ॥ यजमानस्य श्रीमहालक्ष्मीव्रतनिमित्यर्थ ॐ दमर्च्च गृहानस्वा
हा ॥ ॐ आयश्रीलवृम्भग्नानि सिद्धार्थ दधिगन्धुलौ । गंखश्रीयसमादाय सपु
प्पफलवन्दन । जानुश्यो धवलोपुत्त्वा अर्घ्यो यास्तुनि वदयत ॥ ॐ आयुवृद्धि
यशोवृद्धि वृद्धिप्रज्ञासुखश्रिया । धर्मसन्तान वृद्धिश्च सन्तु गस फवृद्धय
॥ ॥ ॐ नि अर्घ ॥ गंखनमस्कार ॥ गायनव्रतिष्ठा ॥ ॐ मनाह्रनि ॥ ॥ थवह्न
वन मङ्गलयाय ॥ जपस्कार ॥ ॐ सर्वमंगलमंगल्ययादि ॥ ॥ वटकालि
काय वृन्दन अरनन वोनावजोड्न ॥ ॐ लक्ष्मी देवी गृहानत्वं अलकजन

याधृनं व्रतसंपूर्णुतागानं कृपयाम्यं कृतुक्षाम ॥ ॥ हातजानपं थान ॥
स्कारप १०७ ॥ ॐ नमः श्रीमहालक्ष्मी देव्यै नमः ॥ ॐ नमस्कस्तु महालक्ष्मी नम
स्कस्तु महेश्वरी । भुक्तिमुक्तिप्रदे देवी नमःस्त्यनमानमः ॥ १ ॥ सिंहास
नस्तमात्स्यथ्राग्न लोगर्भसंभवा । कोलासुरविनाशाय महालक्ष्मी नमानमः
२ ॥ गयासुरविनासाय कृतियागर्भसंभवा । कोमारीरूपसंस्थान
नाय नमामृगं ॥ ३ ॥ लवनासुरविनाशाय नीवर्णसमुद्भवा । का
लकलालवतनी नमःस्तयनमानमः ॥ ४ ॥ वज्रश्वरीमहावीर्यो पर्या

परमरूपिना। मायाबाळरूपदेवी। नमस्ते शक्तिरूपिना॥७॥ जय जय [ये] योगदेवी
जयप्रतेलाकवासनी। जय सृष्टिस्वरूपाय जय कालान्तमानम ४॥ ८॥ जय ब
यस र्वाय सृष्टिसंहारकारणे॥ जय ज्ञानवमूताय जय विज्ञानकारणे॥ ९॥
निमूलसं॥ ॥ कलशय॥ ॐ शुद्ध शान्त शिवब्रह्म हृदयवनम ४ सर्वेशं शंकरं
नं मानन्द ४ भुवनायकस्य नगवन सम्पूर्ण कामप्रदं। वागीश्वरं नन्द ४ स्यवाकुर
वप्रद वामादि शक्ति ध्वनं व्याधि शोक विनाशं दुःख दारिद्र मर्दन जय ४ श्री निर्ग॥
॥ ॥सवय॥ ॐ अनन्त वासुकी श्चैव तक्षक कर्कोटक स्तथा। महापद्म शंख

खपाल कुलिका ध्यनमामुह॥ ॥ॐ वलिया॥ ॐ निर्बाणं निर्विकल्पं निरू
पमतुलं निर्विकारं निराकारं॥ हूंकारं वज्रदंष्ट्रं हुतवह नयनं रौद्र
मक्रतावं। ह्रींकारं बद्धनाम गहकुटिलमूर्धं तत्र वं शूलपाणिं
खड्गहस्तं व्याममानं डमरुकसहितं भैरवा तं नमामि॥ ॥गनपतिया
ॐ हनकपचम देवं कर्म सिद्धि विनायकं। सोताखूपसंपूर्ण हरि
मसूखसंयदं॥ ॥गुरुयात॥ ॐ दवानाश निधिनाश॥ ॥कौमारी

जाया ॥ ॐ कोमानामनूनाडूता नक्षी गाचकवालिनि । सक्षरविन्दमूजावजु
स्थ स्वनी नमोस्तुते ॥ ॥ कनाया ॥ ॐ खाखासक्षसमीननखदहनखपि
विश्वनवा ब्रह्मा कजनाहनकननखान्तकनदवागुन । कल्यानकारन
दारद पसुदिन ४ श्रीसिद्धि श्री गंस्वन काती नाटकनायका विजयमदवा
मरुतैरव ४ ॥ ॥ भाग्रसया ॥ ॐ नमस्क कपिलदया नमस्तो सूनस्रि
यचिनसर्वदारथन् पूजगस्तुनमाम्यहं ॥ ॥ ईरवाचिरव ॥ ॐ ॐ ह
हवानमस्तुत्य कुनदवानमानम ४ । सुनद वाग्रहासर्व पूजाग्रहं नमा

स्तुते ॥ ॐ सर्वमंगलमंगलये ॥ ॐ अथकानप्रहनानाति ॥ ॥ जजमानस्य
श्रीमहालक्ष्मीव्रतनिमित्यर्थं अरगन्धपुष्पधूपदीपयज्ञोपवीतअर्घ
नविरधनसर्वपविपूजुमस्तु ॥ ॥ मंगलसचाद स्वानन कुय ॥ मंगल
विसर्जुन ॥ ॥ ननाद वदकिअदान ॥ ॥ ब्राह्मणपूजा वाकण
दिदक्षिदान ॥ ॥ तूर्यघातुलखन अभिसकविय ॥ ॐ दवस्य
त्वा ॥ वन्दन ॥ ॐ यदहक ॥ सिन्दून ॥ ॐ त्वं उविछदा ॥ आंगी वंद
विय ॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा ॥ ॥ वाक्लगकयर्ग ॥ ० ॥ ध्याननचि थन

रुद्रपदनव ॥ वन्दु मातृनदव ॥ वन्दु मासक ॥ अर्घयावक ॥ अर्घपेडयकाव
धुनविधानेनयाय ॥ ॥ थनसम्मि पूजायागु समार्थ धर्मदिनक ॥ वाक्य
यजमानस्य महालक्ष्मीव्रतपूजा नमह निमित्यर्थ वाक्य ॥ अर्घक्न क्षण
विय ॥ स्नान आदिनधूनक देवादिदक्षि ॥ ब्राह्मणपूजादक्षिण ॥ न्यासा
दि ॥ विसर्जन ॥ अभिषेकादि ॥ ॥ ॐ निमहालक्ष्मीव्रतविधि ॥ समाप्त ॥
वतकाकार्यवाक्य ॥ ॐ अद्यप्रभृति वर्ष ॥ यावदाजिनधातसानुगह व
निधामिथ्यदानवनग्रनक । महालक्ष्मीमिदंसूत्रं सर्वलक्ष्मीदिसंयत ॥ वरु
वर्णसुखार्थव ॥ स्वकधपानयामयह ॥

१ ॐ नमः सूर्याय चंद्रमसे ऽवनाय ॥ व्रतविधानं प्रवक्ष्यामि ॥ चंन
न मिय ॥ स्नानन कृय ॥ धूनीच्चाय ॥ चंन अरुन स्वान ॥ लेखश
नं ॥ ॐ अद्य यूगमंणा ॥ यजमानस्य ॥ सूर्यये व्रतनिमित्यर्थं
क त्वं हृत्यों य अर्घनम ॥ पूषं २ ॥ भाद्रा न्चकार ॥ पूष्य राज
नं ॥ ॐ सिद्धिरस्तु ॥ ब्राह्मणं तं स्वानविय ॥ ब्राह्मणेन ॥ हनूतुं
मननं ॥ न्यास ॥ अर्घपात्रपूजनं ॥ यजमानं स्वनदाय ॥ ॐ
उलंघसिखवंधजानां ॥ ॥ नमावंदार्च्चनं ॥ ॥ ॐ नत्वाजामि

ॐ यस्य कूर्म्मा ॥ ॐ यथ जयन्तु ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ यदक्रंद ॥ ॐ वृ
हस्पत ॥ ॐ पावकान ॥ ॐ श्रीश्चत ॥ ॐ अश्वोज क्राश्चा ॥ सूमसन
द्यानेंखं ॥ ॥ ॐ गणानां त्वा ॥ ॐ आकृष्ण ॥ ॐ प्राणानमित्र ॥ ॐ ब्रा
णसपितन ॥ ॐ सद्यजात ॥ ॐ नमः सम्रुवायच ॥ ॐ नमः स्कंनु
द्रम ॥ ॐ अम्ब अम्बिक ॥ ॐ ॐ नमः गंगे ॥ ॐ यत्ऽणेश्या ॥ ॐ अ
सौश्या ॥ ॐ आयं गौ ॥ ॐ विश्वतचक्षु ॥ ॥ ॐ जात[illegible]नमा
ॐ ध्रुवसी ॥ ॐ गजानि ॥ ॐ अन्नपत ॥ ॐ मनोजूति ॥ ॥

गना आवाहन वाक्य ।। ॐ आगच्छ देवदेवेश वृषभासंस्थ महेश्वर
।द्राविद्रदूस्व नासार्थ धर्म्मार्थ कदमीव ।। पाद्यार्घ लखज्ञान ।। ॐ श्री
नाम्बुकाश्रयंयूक्त नवपादार्घ्यकृतं । मयानदीयतांदेव यथार्के स्थ
लप्राफयांतू ।। हस्तार्घ छवलखज्ञान ।। ॐ वृषभासनसमासिनं सग
वेकुमहेश्वरं । धर्म्मार्थ नरुनाथाय । हस्तार्घ कदमाग्यह ।। वस्त्र । ॐ
दूर्लनंघठदेवाना विचित्रवस्त्रश्वेतं । कर्पासमिदं वस्त्रं स्वर्गति
भूतिमुकर्य ।। ।।नमा द्वानपूजनं ।। ~~ॐ नन्दिकेशनाय नम४।।ॐ वृषभा~~ना
~~वसासु ...नाय४~~।।

ॐ नंदिनेनम४।।ॐ महाकालाय२।। ॐ भृङ्गिने२।। ॐ गणपतये२।।
ॐ वृषभाय२।। ॐ देवी२।।ॐ वज्राय२।। ।।पूर्व्वादि दशदिग ।।ॐ आ
धारशक्तये२।।ॐ अनन्तासनाय२।।ॐ कूर्म्माय२।।ॐ नागाय भ
य२।।ॐ पद्माय२।।ॐ पर्णाय२।।ॐ केशराय२।।ॐ कर्णिकाय२।।
ॐ वृषभाय२।। ।।नमा ध्यान ।। थनजूकालन वावाव त्वानज्ञान ।।
ॐ वृषभासनसूखासीनं भकवर्कतिलोचनं कर्पोन्दमट्टवन्दुहं
ज्ञा दशकूतदुखिनं व्याघ्रचर्म्मपरीधाना गजचर्म्मवगुल्कनं ।।

शुक्लवर्णं त्रिनेत्रं हं ॥ शिवाङ्गमधवलिदं ॥ चन्द्रार्धकालसर्व्वाङ्गं ॥ ना
गकुण्डलभूषितं ॥ चतुर्भुजं अक्षसूत्र ॥ वरदन्दक्षिणेकले ॥ त्रिशू
लन्देवीसमृद्ध ॥ वामहस्ते कुचं धृतं ॥ देवाहचितस्यामंगी ॥ द्विह
स्तत्रिलोचनी ॥ वामतोवधृतन्देवी ॥ पद्महस्ते धृतं ... ॥ उमा
सहितं ध्यायन ॥ सर्व्वकार्यप्रवर्धनं ॥ ध्यानपुष्पंनम ॥ ॥ न्यासपूज
नं ॥ ॐ हृदयाय २॥ ॐ शिरसे २॥ ॐ शिखाय २॥ ॐ कवचाय २॥ ॐ
नेत्राय २॥ ॐ अस्त्राय २॥ ॐ क्षत्रायूनाय २॥ ॐ गणायूनाय २॥ ॐ

द्वापरयूनाय २॥ ॐ कलियूगाय २॥ ॐ ऋग्वेदाय २॥ ॐ यजुर्वेदा
य २॥ ॐ सामवेदाय २॥ ॐ अथर्व्ववेदाय २॥ ॥ अष्टदलपूजा ॥
ॐ महादेवी २॥ ॐ उग्रादेवी २॥ ॐ तीमादेवी २॥ ॐ सर्व्वदेवी २॥
ॐ पशुपतये २॥ ॐ रुद्राय २॥ ॐ भीमाय २॥ ॐ ईशानाय २॥ ॥
इति अष्टदल ॥ ॥ गणावाचन्हलि पञ्चपूजा ॥ ॥ ॐ शिवाय उ
मादेवी सहितायनमः २॥ ॐ देवदेवाय कात्यायनीदेवी सहिताय २॥

ॐ त्र्यम्बकाय भवानीदेवीसहिताय २॥ ॐ हराय कुब्जिकादेवीसहि
ताय २॥ ॐ सर्वाय गौरीदेवीसहिताय २॥ ॐ भवाय भवानीदे
वीसहिताय २॥ ॐ नीलकण्ठाय कालरात्रीदेवीसहिताय २॥ ॐ पि
ङ्गलाय रुतनादेवीसहिताय २॥ ॐ रुद्राय [illegible]देवीसहिताय २॥ ॐ ई
शानाय ब्रह्मकीर्तिनीदेवीसहिताय२॥ ॐ उग्राय सावित्रीदेवीसहिताय२॥
ॐ चन्द्रमूर्द्धनिधनाय पार्वतीदेवीसहिताय२॥ ॥ॐ शिवादशायपरपू
जा॥ ॥पुनश्चपूजनं॥ ॐ महादेवाय२॥ ॐ सम्भवाय२॥ ॐ ईशाना

य२॥ ॐ पशुपतय॥ ॐ शिवाय२॥ ॐ त्रिशूलपानये२॥ ॐ शूलपानय
२॥ ॐ महादेवाय२॥ ॐ सर्वाय२॥ ॐ भवाय२॥ ॐ नीलकण्ठाय२॥
ॐ पिङ्गलाय२॥ ॐ रुद्राय२॥ ॐ ईशानाय२॥ ॐ धूर्जटिने२॥ ॐ उ
ग्राय२॥ ॐ वृषभनाय२॥ ॐ [illegible]नाय२॥ ॐ दिगम्बराय२॥
ॐ मृत्युञ्जयाय२॥ ॐ कीर्तिवासाय२॥ ॐ पिनाकी२॥ ॐ जगन्ना
थ२॥ ॐ कपर्दिने२॥ ॐ श्रीकण्ठाय२॥ ॐ कपालधनाय२॥
ॐ वामदेवाय२॥ ॐ विरूपाक्षाय२॥ ॐ त्रिलोचनाय२॥

ॐ हनाय २॥ ॐ जेलाक्षनाथाय २॥ ॐ श्रह्मकाय २॥ ॐ त्रिपूरान्तका
य २॥ ॐ गंन्धाय २॥ ॐ वृषरुध्वजाय २॥ ॐ ध्यामकेशाय २॥ ॐ धन्व
२॥ ॐ उमायरुच्य २॥ ॐ जगनेनाय २॥ ॐ श्रीकण्ठाय २॥ ॐ सद्योजाताय २॥
ॐ रत्मनाय २॥ ॐ व्याघ्रुतुषनाय २॥ ॐ कार्त्तिकाय २॥ ॐ जघानाय २॥
ॐ कामात्मेनाथाय २॥ ॐ देवदेवेवी २॥ ॐ सर्पत्तुषनाय २॥ ॐ पार्व
तीप्रियाय २॥ ॐ नत्यूनूषाय २॥ ॐ जगन्तरत्मनाथाय २॥ ॐ त्रिन
ऊनाय २॥ ॐ गानकेसाय २॥ ॐ सर्वव्याधेस्वनाय २॥ ॥ ॐ॥ गिद

वपूजन ॥ गणदेवीपूजा॥ ॥ ॐ उमादेवी २॥ ॐ कात्यायनी २॥
ॐ गौरीनी २॥ ॐ कानी २॥ ॐ हैमवती २॥ ॐ ईश्वरी २॥ ॐ शिवाये
२॥ ॐ भवाय २॥ ॐ सर्वाय २॥ ॐ सुर्वमंगलाय २॥ ॐ अपर्णा
यु २॥ ॐ पार्वती २॥ ॐ दुर्गाय २॥ ॐ मिराय २॥ ॐ चण्डिकाय २॥
ॐ अम्बिकाय २॥ ॐ कालनार्थी २॥ ॐ महादेवी २॥ ॐ महेश्वरी २॥
ॐ सृष्टिकर्त्री २॥ ॐ पालिकनी २॥ ॐ प्रयानकी २॥ ॐ भवनी २॥ ॐ
शुभस्वनी २॥ ॐ त्रिभुवनसायकी २॥ ॐ पनमगकेश्वनी २॥ ॐ जा

यी स्वनी २॥ ॐ घनमस्वनी २॥ ॐ धवधव स्वनी २॥ ॐ गायत्री देवी २॥
ॐ मारुनी २॥ ॐ सरस्वत्यय २॥ ॐ सावित्री २॥ ॐ साकम्बरी नी २॥ ॐ रुद्रवाग्री
णी २॥ ॐ समरुनी २॥ ॐ शिङ्खमसणी २॥ ॐ विश्वव्यापिनी २॥ ॐ सङ्क
हनी २॥ ॐ निविद्धि २॥ ॐ प्रतिष्ठा॥ ॐ सूभद्रे २॥ ॐ गोमती णी २॥
ॐ ब्रह्मणी २॥ ॐ ब्राह्मणी २॥ ॐ ऊग्रस्वयु रुद्राय २॥ ॐ पाचिनी २॥
ॐ ब्राह्मणी देवी २॥ ॐ विद्यावी देवी २॥ ॐ स्ववाहेन्ये २॥ ॐ सूर्य्य देवा
य २॥ ॐ रजनी देवी २॥ ॐ क्रियादेवी २॥ ॐ लक्ष्मी देवी २॥ ॐ तया

देवी २॥ ॐ सर्वसिद्धि स्वनी देवी २॥ ॐ सिद्धि स्वनी देवी २॥ ॐ सद्योजा
ताय यनमः देवी २॥ ॐ वामदेवाय उमा देवी २॥ ॐ अघोराय अ
घोर स्वनी देवी २॥ ॐ तत्पुरुषाय जम्बुका देवी २॥ ॐ इति मद्वपूजा॥
चन्दन वाक॥ ॐ श्रीखण्ड चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरं म
याविल्पियन्ते पित्तं गंध प्रतिगृह्यतां यवनस्त स्वन॥ ॥ नमाक॥ वाक॥
ॐ गन्धर्व नाथ देवनाथ सर्वव्यापि मदं ध्वनं विनयनंकूवू रुद्री
यायथं प्रतिगृह्यतां॥ ॥ सिंधून॥ वाक॥ ॐ सानीकिचन नवलेजा
सिंधूरं सोभयं हषनं प्रतिच्छ सर्वलोकेश पशुपति रन्तसिद्धये॥

अक्षत ॥ वाक्य ॥ ॐ अक्षतं तु नैवेद्यं सर्व्वकामवरप्रदं । तस्मात् [illegible] देव देव
स अक्षताय नमोस्तुते ॥ ॥ कपास ॥ कानुली ॥ कवूति ॥ ध्वाय ॥ ॥ उ
जमको ॥ वाक्य ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पु
रस्तात् आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥ माल
स्वान ॥ वा ॥ विचित्रपुष्पमालाश्च दुर्ममामालिकानि च । सं पूज्य विधिव
त्कृत्वा गृह्णताः समहेश्वरे ॥ ॥ नास्वान ॥ वाक्य ॥ ॐ अःस्मकं विल्वपत्र
ञ्च [illegible] दमनस्तथा । कुन्दकमल्लिकाश्चैव तुलसी कनवीरकं ॥ गृ
ह्यताञ्च देवदेवेशि पुष्पं नानाविधं शुभं ॥ ॥ दमन ॥ ॐ कंदर्पराम [illegible]

समं जात प्रविशेद्दमनं शुभं । गृह्यताञ्च मदंशाय ध्याताङ्ग सर्व्वकामदं ॥
ॐ गिमूलपूजा ॥ ॥ तत्राङ्गस्य पूजनं ॥ ॐ ब्रह्मणेनमः ॥ ॐ विष्णवे २ ॥
ॐ रुद्रादित्याय २ ॥ ॐ मार्कण्डेय २ ॥ ॐ काश्यपाय २ ॥ ॐ वसिष्ठाय २ ॥
ॐ व्यासाय २ ॥ ॐ गौतमाय २ ॥ ॐ भरद्वाजाय २ ॥ ॐ यमदग्नेय २ ॥ ॐ
आदित्यादि नवग्रहेभ्यो २ ॥ ॐ मृत्युञ्जयाय । शिवशक्ति सहिताय २ ॥ ॥
उजमको ॥ वाक्य ॥ ॐ यज्ञोपवीत ॥ स्वान ॥ ॐ विचित्रपुष्पमालाश्च ॥
ॐ गिङ्गस्य पूजा ॥ ॥ तत्रा पावकु पूजनं ॥ ॐ गङ्गाय २ ॥ ॐ यमुना

यश॥ ॐ निर्म्मदाय २॥ ॐ कावनी २॥ ॐ मनस्वुगी २॥ ॐ गन्धकी २॥ ॐ कोसि
की २॥ ॐ वामव्यमगी २॥ ॐ चन्द्रनागाय २॥ ॐ नक्षगनक्या २॥ ॥ यजम
का॥ ॐ यज्ञोपवीतं॥ स्नान॥ ॐ विविधपुष्पमालाय॥ ॐ नि वायकु ॐ पूजा
॥ ॥ नमा गणपतिपूजनं॥ ॐ गणपतय २॥ ॐ हेरम्बाय २॥ ॐ लम्बो
तनाय २॥ ॐ विघ्नराजाय २॥ ॐ एकदन्ताय २॥ ॐ गणपतिमूर्त्तय स्वा
२॥ ॥ स्वाद्रयजम॥ ॐ यज्ञोपवीतं॥ स्वाद्रस्नान॥ ॐ विविध पुष्पमा
लाय॥ ॐ नि गणपतिपूजा॥ ॥ नमासकूणपूजनं॥ ॐ ज्येष्ठमाय

२॥ ॐ वलिव २॥ ॐ व्याग्भय २॥ ॐ हनुमन्ताय २॥ ॐ नीलिषनाय २॥ ॐ कु
घाय २॥ ॐ पवसूनामाय २॥ ॐ मार्कण्डेय २॥ ॐ ज्येष्ठमाय ज्येष्ठवि
नेत्राय स्वा २॥ ॥ ऊरमाका॥ ॐ यज्ञोपवीय॥ स्नान॥ ॐ विविधपुष्प
मालाय॥ ॐ नि सकूणपूजा॥ ॥ नमा वलिपूजनं॥ ॐ स्वच्छन्द भैरवा
याय २॥ ॐ नरसिंह महाभैरवाय २॥ ॐ कुलाछकभैरवाय २॥ ॐ नया
लवकु लाकुवी २॥ ॐ प्रियाभि माहेश्वरी देवी २॥ ॐ लं कायालाकुमारी
देवी २॥ ॐ कुलिका सिद्धि भैरवाय २॥ ॐ ब्रह्मण्यादि माहगणेभ्याय २॥

ॐ सर्व्वस्थानपालस्या २॥ काकू यजम॥ ॐ यज्ञोपवीर्त॥ काकू स्नान॥ ॐ वि
चित्रपुष्पमालाव॥ इति बलिपूजा॥ ॥ नगरमध्ये अष्टपूजनं॥ ॐ नन्दाय २॥
ॐ नन्दोय २॥ ॐ सुनन्दाय २॥ ॐ सुन्दरी २॥ ॐ सुमनस २॥ ॐ लोचनी २॥ ॐ
कपिलादिपञ्चनागकस्या २॥ यजमका॥ ॐ यज्ञोपवीर्त॥ स्नान॥ ॐ
विचित्रपुष्पमालाव॥ इति नागासपूजा॥ ॥ नगरद्वारपिरवापूजनं॥ ॐ ब
लिघ्नलाङ्गनाय २॥ ॐ धनदवाय २॥ ॐ कुलदवाय २॥ यजमका॥ ॐ यज्ञोपवी
र्त॥ स्नान॥ ॐ विचित्रपुष्पमालाव॥ ॥ इति द्वारपिरवापूजा॥ ० ॥ नगरमूल
देवपूजनं॥ ॐ उमामहेश्वराय २॥ ॐ अष्टचन्द्रादिनक्षत्रस्या २॥ ॐ इन्द्रा
दिलोकपालस्या २॥ ॐ विघ्नकादिभागस्या २॥ ॐ भैरवादिद्वादशनालि
स्या २॥ ॐ पृथिव्यादितिथिस्या २॥ ॐ आदित्यादिनवग्रहस्या २॥ ॥ यज
मका॥ ॐ यज्ञोपवीर्त॥ स्नान॥ ॐ विचित्रपुष्पमालाव॥ ॥ दीयाहाल॥
ॐ दुर्व्वापुष्पानि सर्व्वानि सर्व्वकिल्विषनाशनि धर्मसन्तान पुत्र्यादि व
र्द्धनं गृह्यन्तां शिव॥ ॥ हल॥ ॐ श्रीहलं कतनीद्राक्ष धारिवहविग
कीनथाः अञ्चिर्वं वतनी स्थिव दतिमं हलपुष्पकं॥ ॥ नामूनपू

मी ॥ ॐ सर्व्वसीमानुसंपन्नि नाग्रपदचियन्द ॥ नाम शोकविनिर्मुक्तं
नाम्बुन प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ नैवेद्य ॥ ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देव नकि मधु
वृत्तकिनू ... पिसि न मूल ली दधियवन ग्रस्यययवा मीति ॥ आचमनं ॥
ॐ संकुर्व्व यवचूर्ण्णेन घृतानपाचयन्कथा सक्रुलान्नदिर्न्युक्तं पक्वान्नं गृ
ह्यतां प्रभो ॥ ॥ धूप ॥ ॐ वनस्पत्युद्भवं दिव्यं नानागन्ध समन्वितं आघ्र
नं सर्व्वदेवानां धूपायं प्रतिगृह्यतां ॥ ॥ दीप ॥ ॐ आज्ययुक्तं वर्त्तिकायुक्तं
वह्निनाज्वलितं तु यत्कं गृहाण देवदेवेश त्रैलोक्यतिमिरापहन ॥०॥ ॥

नमो सूर्याय ॥ अर्घ्यपूजनम ॥ ॥ ॐ यजमानस्य सूर्यो भयो व्रतनिमित्त
र्थं ॐ इदमर्घ्यं दान स्वाहा ॥ ॐ आपः क्षीर कुशाग्रानि सिद्धार्थन्दधि
गन्धं च सर्ववर्णायसमादाय सपुष्पफलचन्दन जानुभ्यामवनी कृत्वा
अर्घ्योयाङ्क विश्वदश्यतू ॥ ॥ आयवृद्धि ॥ संखनमस्कार ॥ अग्रेतन कुव
कोनयतू ॥ वाचनक्षाय ॥ जयमात्र ॥ ॐ नमस्तेस्तु लिवाधिति उ
मारुद्रवीनमोनमः ॥ नमस्ते रुद्ररुद्राय कात्यायनी नमोस्तुते ॥१॥
रुद्रचकाय नमः नमस्तु ... दुर्गेन्द्रवीनमोनमः नमस्ते ... नवदेवि
रुद्राद्रवीनमोनमः ॥२॥ नमस्तु ... चायपि सुद्रियाय नमोनमः

सं कनायनमस्तुते कोवनाशीनमोनमः४ ॥ ३ ॥ नमः४ स्तु हरवर्याति मुक्ता
भीचीनमोनमः४। नमः४ स्तु नीलकण्ठाय देवतीवनमोनमः४ ॥ ४ ॥ पिर्गीला
यनमः४ स्तुते हरनायकीनमोनमः४। रुद्रायऽस्तु नमः४ स्तुते अपर्योऽ
वीनमोनमः४ ॥ ५ ॥ श्रीभनायनमः४ स्तुते प्रकीर्ति दवीनमोनमः४। उग्रा
यऽस्तु नमः४ स्तुते गानवायकृऽस्तुतीनमः४ ॥ ६ ॥ नमः४ स्तु चन्द्रमस्तकाय पा
र्वतीवनमोनमः४। सर्व्वपापविनिर्मुक्तं शिवलोकमहीयते ॥ ७ ॥ ॥
कृणया ॥ ॐ शुद्ध श्री नशिवप्रसादयनमः सर्व्वकृणकऽस्तुते सानन्द हर
नायकस्य तनवो संपूर्णकामप्रदं वामाभावनदः४ सवाकृविरुवदं

वासद्धिशक्तिप्रदा वापिऽमोकजलादिकृष्ठरयद्धु मनोऽजयशाद्धिमी
॥ गऽवसया ॥ ॐ विघ्नऽस्वनायविनाय ॥ ॥ वलिया ॥ ॐ नित्यानन्द ॥ ॥ ऽम
ग्रस.या ॥ ॐ नमः४ स्त कपिर्न्नदवी ॥ ॥ पापकण्डुया ॥ ॐ नमः४ स्त धर्म्म
कुण्डाय पापिनीपटनायव । पापिनीमाकनाथय पापकुण्डुयनन
मः४ ॥ ॥ दूस्वापिंस्वाया ॥ ॐ ऽं ह्रऽव नमः४ स्तुते ॥ क्षमाउगि ॥ ॐ पाधा
हं पापकर्म्माणि पापात्मा पापसंभव । त्राहिमीं देवदेव ग । सर्व्वपाप
हराभव ॥ अन्यथाशरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ४ तस्मात्कारुणता

वंन वस्त्र नक्षीमर्द स्वन॥ ॥यजमानस्य नस्य स्वअर्थेव्रतनिमित्य धर्म्म आग
न्या धूपदीप अर्घ्यनैविधिनासर्व्वविधिपनिपूर्जुमस्तु॥ ॥मण्डलविसर्ज्जनं॥
ब्राह्मणपूजा॥ दक्षिदानं॥ सूर्यसाक्षिथाय॥ न्यासयाय॥ यजमान॥
कलशाभिषेकं॥ चन्दन॥ सिंधूर॥ शकुन॥ आशीर्वाद॥ आचमन॥
निर्म्माल्यनदिवाहयत॥ ॐमित्य धर्म्मविधिसमाप्त॥ शुभ॥ सम्वत् ८२१ आषा
ढ कृष्ण पञ्चमी हस्तनक्षत्र॥ शुक्रवासर॥ थ्व नं॥ धीविक्र ९८ या॥
ववृभाकव्यनस वीयाक्षथा॥ स्वअसस्वयक्षमा॥

सकुन	कलश	पायकू ङु
भोग स	मूलदे	बलि
सुरुवा चिखा	अर्घ पात्र	भोजा

मन

ब्राह्मण॥ यजमान

१ सं ८२७ शुक्र व्रत या १ थासंवसलसं॥
१ तुल ओ नामरु। १ सि ७०७ १ थासंवसल या
१ सिद्धि नामरु। श्री कृनि १ वनरु १ वन
१ नलसिंहकाय। १ विन वरु कें २
१ त्यामरु कें २
१ वन रि चायनव्रत या